卐 ॐ नमः शिवाय 卐

रत्न ज्ञान

राशिज्ञान



शिव रत्न केन्द्र (रजि०)
27, सीढ़ियां चढ़ने के उपरांत,
सन्तल सराय, गऊघाट हरिद्वार (उत्तरांचल)
☎ 0133-426965, 428769, 423831

श्री प्रकाशेश्वर महादेव मन्दिर
शिवपुरी, मसूरी रोड, देहरादून (उत्तरांचल)
☎ 0135-734155, 734799

मूल्य 20 रूपये मात्र

हरिद्वार



हरिद्वार भारत का एक पौराणिक तीर्थ–स्थल है। यह माँ गंगा की पावन स्थली है जहाँ पर लाखों श्रद्धालु अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति हेतु दर्शन एवं स्नान करने आते हैं। माँ गंगा सभी की मनोकामनायें पूरी करती हैं। धार्मिक दृष्टिकोण से भी यह एक पवित्र एवं पुरातन भूमि मानी जाती हैं।

यहां पर शाम को आरती में हजारों की संख्या में लोग शामिल होते हैं। यहाँ पर पतित–पावनी गंगा अपनी मंद–धारा के साथ प्रवाहित होती है। लोग यहां पर पुष्प समर्पण करके अपने स्नान, दान, एवं अन्य कर्मो का पुण्य अर्जित करते हैं। यह मन्दिरों की नगरी भी कही जा सकती है। शाम के समय हर की पौडी अद्भूत और भव्य नजर आती है। यहाँ पर मन्दिरों और आश्रमों की छटा देखते ही बनती हैं। जिसमें भारत माता का मन्दिर, मन्सा देवी तथा चंड़ी देवी, बिल्वकेश्वर महादेव तथा दक्षेश्वर महादेव का मन्दिर प्रमुख हैं।



हर की पैड़ी से दक्षिण की ओर गंगा के किनारे लगभग 75 कदम चलने पर

शिव रत्न केन्द्र (रजि०), हरिद्वार

पहुंचने के लिये सबसे आखिरी पृष्ठ देखें

卐 ॐ नमः शिवायः 卐

रत्न ज्ञान

धारण विधि एवं लाभ



(श्री प्रकाशेश्वर महादेव जी के चरणों में सादर समर्पित)

लेखकः-

शिवदास मूलचन्द खत्री

प्रकाशक/पुस्तक मिलने के प्रमुख स्थानः

श्री प्रकाशेश्वर महादेव मन्दिर

शिवपुरी, मसूरी रोड़ देहरादून (उत्तरांचल)

एवं

शिव रत्न केन्द्र (रजि०)

27 सीढ़ियां चढ़ने के उपरान्त
सन्तल सराय, तीसरी मंजिल
गऊघाट- हरिद्वार 249 401
पोस्ट बाक्स नं. 55

द्वितीय संस्करणः जून, 2002

卐 ॐ नमः शिवायः 卐

नम्र निवेदन

मान्यवर,

डाक-विभाग की दरें बहुत बढ़ गई हैं। अब घर बैठे वी.पी.पी. द्वारा सामान मंगाने पर आपको लगभग 10 प्रतिशत से 15 प्रतिशत तक डाक खर्च, डाक-विभाग को देना पड़ता है। आपका यह डाक खर्च बचाने के लिए हमने एक योजना शुरू की है। आप अपने आर्डर की पूर्ण धनराशि मनीआर्डर अथवा बैंक ड्राफ्ट (बैंक चैक स्वीकार नहीं होगा) द्वारा नीचे लिखे पते पर हमारे पास भेज देवें। धनराशि प्राप्त होने पर आपके आर्डर पर बढ़िया व अच्छा सामान सुरक्षित रूप से डाक इन्श्योर्ड द्वारा अतिशीघ्र ही आपके पास भेज दिया जायेगा। पूरा डाक खर्च फर्म की ओर से खर्च होगा। इसमें आपके ऊपर किसी प्रकार का डाक खर्च नहीं आयेगा।

आर्डर-धनराशि भेजने का पता:-

मूलचन्द खत्री
शिव रत्न केन्द्र (रजि.)
२७ सीढ़ियां चढ़ने के उपरान्त
सन्तल सराय, तीसरी मंजिल
गऊघाट- हरिद्वार २४९ ४०१
पोस्ट बाक्स नं. ५५

शिवदास
श्री प्रकाशेश्वर महादेव मंदिर
शिवपुरी, मसूरी रोड़,
देहरादून (उत्तरांचल)

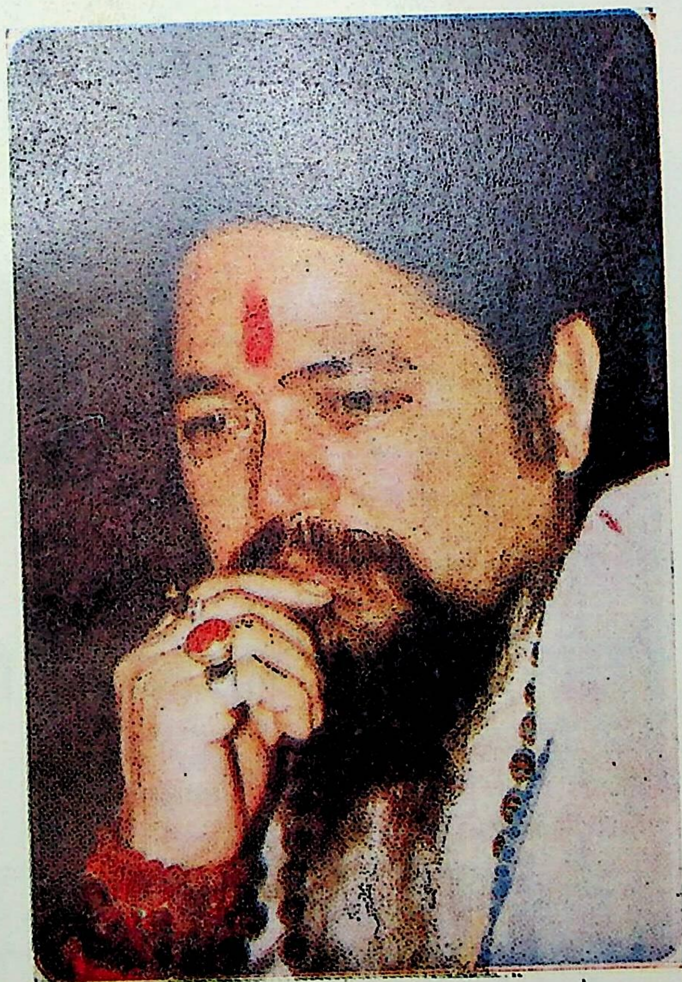
॥ ॐ नमः शिवाय ॥

रत्न-ज्ञान

धारण विधि एवं लाभ



भगवान श्री प्रकाशेश्वर महादेव जी के चरणों में सादर समर्पित ।

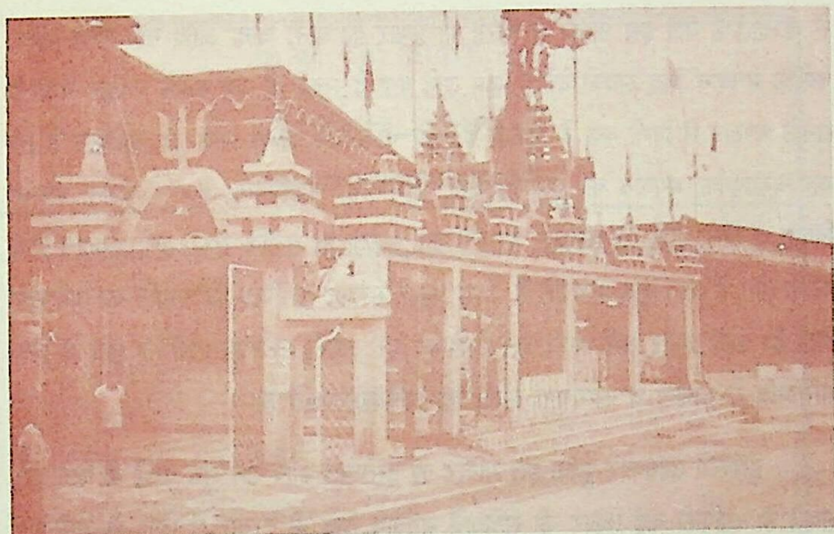


शिवदास मूलचन्द खत्री

आप अपने जीवन के प्रारम्भ से रुद्राक्ष और राशि के पत्थर (रत्नों) में कौन सी देवी अलौकिक शक्ति है, खोजते रहे हैं। अपने अध्ययन तथा साधना से जो प्राप्त किया है वही इनकी तपस्या की कमाई है।

नोट—इस सन्तल सराय बिल्डिंग के नीचे ग्राउण्ड फ्लोर पर हमारी कोई भी दुकान या ब्रांच नहीं है, कृपया धोखा न खायें।





मनोकामना पूर्ण करने वाला
पावन सिद्धपीठ स्थल

श्री प्रकाशेश्वर महादेव मन्दिर

कुठाल गेट, शिवपुरी मसूरी रोड़ देहरादून (उत्तरांचल)
☎: 0135– 734155, 734799

संसार में संतप्त (दुःखी) प्राणी अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिये इस सिद्धपीठ में जब भी झोली फैलाते हैं भगवान शिव जिनके भण्डार पूर्ण हैं श्रद्धालुओं की मनोकामनाओं को पूर्ण कर देते हैं। हजारों श्रद्धालु अपनी कठिन से कठिन समस्या का समाधान इस स्थान से प्राप्त कर चुके हैं। उन सभी की मनोकामनाएं इस मन्दिर में आने से पूर्ण हुई हैं लोगों की श्रद्धा एवं विश्वास प्रतिदिन इस मन्दिर में बढ़ता ही जा रहा है यह भव्य मन्दिर देहरादून मसूरी रोड़ पर देहरादून से 13 किलोमीटर मसूरी से पहले सड़क के किनारे, जिसके चारो और प्राकृति की अद्भूत छटाएँ हैं। वृक्ष की पावन छाया में स्थापित हैं।

इस मन्दिर की स्थापना भगवान शिव के हरिद्वार स्थित अपने संस्थान शिव रत्न केन्द्र की ओर से की गई हैं। इसकी देख-भाल एवं व्यय स्वयं शिव रत्न केन्द्र के माध्यम

से करवाते हैं यहाँ इस मन्दिर में किसी भी प्रकार का दान, चन्दा आदि नहीं लिया जाता, क्योंकि भगवान शिव सबको देते हैं, हम उन्हें क्या दे सकते हैं। जो सबके भण्डार भरते हैं उनके भण्डार में प्राणी क्या दे सकता हैं? इस मन्दिर में प्रत्येक प्राणी का अधिकार है कि वह श्रद्धापूर्वक भगवान की पूजा, अर्चना, अनुष्ठान, रुद्राभिषेक, भजन, कीर्तन, सत्संग विवाह व अन्य खुशी के कार्यक्रम सम्पन्न कर सकता है। क्योंकि सभी प्राणी भगवान शिव की सन्तान हैं और शिव प्रजापति हैं, जिस प्रकार सन्तान को पिता की सम्पत्ति का अधिकार होता है। उसी प्रकार सभी प्राणी इस सिद्धपीठ पर अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति के लिये भक्तिभाव से अर्चना व आराधना करने का अधिकार रखंते हैं।

इसलिये अधिकार पूर्वक इस मन्दिर का इस्तेमाल आप उन शुभ कार्यों के लिये कर सक्ते हें। आपको कई प्रकार की सुविधायें भगवान शिव के दरबार में प्राप्त हो जायेगी।

धन्यवाद सहित !

सदैव भगवान शिव के चरणों में :-

शिवदास मूलचन्द खत्री

श्री प्रकाशेश्वर महादेव मन्दिर

कुठाल गेट, शिवपुरी मसूरी रोड़ देहरादून (उत्तरांचल)

☎: 0135– 734155, 734799

एवम्

शिव रत्न केन्द्र (रजि०)

27 सीढ़ियाँ चढ़ने के उपरान्त, सन्तल सराय, तीसरी मंजिल

गऊघाट, हरिद्वार- 249401

☎: (0133) 426965

卐 ॐ नमः शिवायः 卐

विषय-सूची

卐 ॐ नमः शिवायः 卐

शिव स्तुति

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय, भस्मांगरागाय महेश्वराय।
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय, तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय॥

जिनके कण्ठ में साँपों का हार है, जिनके तीन नेत्र हैं, भस्म ही जिनका अङ्गराज (अनुलेपन) है, दिशायें ही जिनका वस्त्र है (अर्थात् जो नग्न है), उन शुद्ध अविनाशी महेश्वर 'न' के स्वरूप शिव को नमस्कार है ।।१।।

मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय, नंदीश्वरप्रथमनाथमहेश्वराय।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय, तस्मै 'म' कराय नमः शिवाय॥

गंगाजल और चन्दन से जिनकी अर्चना हुई है, मन्दार-पुष्प तथा अन्यान्य कुसमों से जिनकी सुन्दर पूजा हुई है, उन नन्दी के अधिपति प्रथमगणों के स्वामी महेश्वर 'म' के स्वरूप शिव को नमस्कार ।।२।।

शिवाय गौरीवंदनाब्जवृन्द, सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय, तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय॥

जो कल्याण स्वरूप है, पार्वती जी के मुख कमल को विकसित (प्रसन्न) करने के लिये जो सूर्यस्वरूप हैं, जो दक्ष के यज्ञ का नाश करने वाले हैं, जिनकी ध्वजा में बैल का चिन्ह है, उन शोभावाली नीलकण्ठ 'शि' के स्वरूप शिव को नमस्कार है ।।३।।

वशिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्य, मुनिन्द्रदेवार्चितशेखराय।
चन्द्रर्कवैश्वानरलोचनाय, तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय॥

वशिष्ठ, अगस्त्य और गौतम आदि श्रेष्ठ मुनियों ने तथा इन्द्र आदि देवताओं ने जिनके मस्तक की पूजा की है, सूर्य और चन्द्र अग्नि जिनके नेत्र है उन 'व' के स्वरूप शिव को नमस्कार है ।।४।।

यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगबराय तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय॥

जिन्होंने यक्ष रूप धारण किया है, जो जटाधारी है, जिनके हाथ में पिनाक है, जो दिव्य सनातन पुरुष हैं, उन दिगम्बर देव 'व' के स्वरूप शिव को नमस्कार है।।५।।

पंचाक्षरमिदं पुण्य यः पठेच्छवसहन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते।।

जो शिव के समीप इस पवित्र पञ्चाक्षर का पाठ करता है, वह शिवलोक को प्राप्त करता और वहाँ शिवजी के साथ आनन्दित होता है ।।६।।

इति शिवार्पणमस्तु

卐 ॐ नमः शिवायः 卐

उद्देश्य



सम्पूर्ण संसार में अध्यात्मवादी विचारक साधकों को छोड़कर प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी अंश में दुःखी है, कोई शारीरिक रोगों से पीडित है, किसी को मानसिक कष्ट है तो कोई निर्धनता से दुःखी है, दुःखी मनुष्य अपने दुःख को मिटाने का उपाय साधु सन्तो से पूछते हैं। भविष्य वक्ताओं, ज्योतिषाचार्यों के पास पहुँचते हैं। ये इन दुःखी लोगों को अनेक प्रकार के जप, यज्ञ, अनुष्ठान बताते हैं। ग्रहों के प्रकोप से बचने के लिये अष्टधातु की अंगुठियां और रत्न धारण करने को कहते हैं।

ग्रहों के प्रकोप से बचने के लिये भारत में रत्न धारण करने का प्रचलन अनादि काल से चला आ रहा है और वह लाभदायक भी सिद्ध हुआ है परन्तु रत्नों की पहचान प्रत्येक व्यक्ति नहीं जान सकता। रत्न की पहचान तो जौहरी ही जान सकता है।

पाश्चात्य विद्वानों द्वारा रत्नों की परीक्षा यन्त्रों द्वारा भी की जाने की बात कही हैं। रत्नों द्वारा जाँच करने की विधियों का वर्णन किया है जिससे इन बातों का ज्ञान सूक्ष्म रूप से किया जा सकता है परन्तु भारत में बिना यन्त्रों के भी केवल नेत्रों द्वारा परीक्षण सुदीर्घ काल से करते चले आ रहे हैं। वह लोग भी यही बाते तौल गुरुत्व, घनत्व, कठोरता आदि की जाँच हाथ में लेकर नेत्रों से देखकर बता दिया करते थे और आज भी बता देते हैं। अभ्यस्थ व्यक्तियों द्वारा बताने पर पूर्णतया सही सिद्ध होती है। इस वैज्ञानिक तथा तान्त्रिक युग में भी रत्न की परीक्षा नेत्रों द्वारा किया जाना नितान्त आवश्यक है। यन्त्र तो नेत्र को सहायता मात्र कर सकता है। पत्थर में क्या दोष है, क्या किस्म है, क्या गुण हैं, सब कुछ यन्त्र तो नहीं बता सकता। आज के समाज में बेईमानी, धोखा, ब्लैकमेल, मिलावट इत्यादि साधारण बात हो गयी है। किसी न किसी प्रकार से अर्थ की प्राप्ति हो, उद्देश्य रह गया है। आप विचार कीजिये, कोई व्यक्ति अपना दुःख दूर करने के लिये रत्न धारन करने का विचार करके बाजार में पहुँचे और उसे असली वस्तु न मिले, तो उसे पैसा गंवाने का दुःख और भी बढ़ जायेगा। रत्न (जवाहरात) के खरीदार धोखे से बचें इसलिये हमने यह पुस्तक तैयार

की, इसको पढ़कर बहुत से रत्न प्रेमी रत्नों के सम्बन्ध में जानकारी हासिल कर सके इस पुस्तक में रत्नों की उत्पत्ति, बनाने की विधि तथा असली-नकली का संकेत मात्र पहचान लिखी है।

आज लगभग मेरा 45 वर्ष का अनुभव है कि जिसको मैंने जो सुझाव सहित पत्थर दिया, उन्हें पत्थर या रत्न ने उसे लाभ भी पहुँचाया। जो मुझसे पत्थर लेकर गया उसे अपने भाग्य की उन्नति ही दिखाई दी इसी कारण हरिद्वार तीर्थ में देश-विदेश से आने वालों का विश्वास मेरे प्रति बढ़ता ही रहा है। इसी प्रकार से आप लोगों का प्रेम ओर विश्वास बढ़ता ही रहे। आप सभी का मंगलमय जीवन हो तथा मुझे आपसे प्रेम और आशीर्वाद सदा ही मिलता रहे, यही भगवान भोलेनाथ से मेरी प्रार्थना है।

क्षमा एवं याचना

इस पुस्तक से आप लाभ उठा सकें, मेरी यही भावना है, परन्तु प्रत्येक व्यक्ति किसी भी कार्य का सर्वज्ञ नहीं हो सकता। इसलिये पुस्तक में अनेक प्रकार की त्रुटियाँ भी हो सकती हैं, जिसके लिये मैं बार-बार क्षमा प्रार्थी हूँ तथा रत्नों के सम्बन्ध में विशेष जानकारी रखने वालों से नम्र निवेदन है कि इस पुस्तक की त्रुटियों को हम तक अवश्य ही पहुँचायें। जिससे हम अगले अंक में सुधार कर सकें यदि इसे पढ़कर हमारे पास पहुँच पायें तो आपकी राशि के अनुसार कौन सा रत्न धारण करना चाहिये, सही परामर्श दिया जायेगा। रत्न असली होने की गारन्टी क्वालिटी के अनुसार मूल्य लिया जायेगा और साथ में एक गारन्टी कार्ड दिया जायेगा, जिसमें लिखा होगा- नकली साबित करने वाले को 2,50,000/– रुपये नकद इनाम।

卐 ॐ नमः शिवायः 卐

रत्नों के सम्बन्ध में कुछ निवेदन



ग्रहों का प्रभाव :-

संसार में प्रत्येक प्राणी पर ग्रहों का प्रभाव पड़ता है। इस बात को सभी मानते हैं। केवल भारत में ही नहीं बल्कि यूरोप और अमेरिका में भी भाग्य और ग्रहों के मानने वाले इस समय भी करोड़ों सुशिक्षित व्यक्ति मौजूद हैं। इन देशों के व्यक्ति भी सदा इस बात के लिये सचेत रहते हैं कि अपने आपको अशुभ ग्रहों से बचायें। जो लोग ऐसा कहें कि ग्रहों का असर पृथ्वी पर नहीं पड़ता, तो सूर्य की गर्मी से खेत और फल पकते हैं, चन्द्रमा के प्रभाव से जड़ी-बूटियां स्वरस होती हैं। समुद्र में ज्वार-भाटा का आना-जाना बढ़ता है, समुद्र का जल उतना ही ऊपर उठता जाता है। जल का ऊपर उठना चन्द्रमा का आकर्षण ही है। चन्द्र ग्रह पृथ्वी के अत्यधिक निकट है इसीलिये यह प्रभाव प्रत्यक्ष देखने में आते हैं। अन्य ग्रह पृथ्वी से दूर हैं, इनका प्रभाव धीमी गति से होता है।

यों तो अनन्त कोटि नक्षत्रों का दर्शन प्रति दिवस करते ही रहते हैं किन्तु इन सम्पूर्ण नक्षत्रों को ग्रह नहीं कहते। हमारी इस पृथ्वी पर जिन नक्षत्रों का निकट सम्बन्ध है वे ही नक्षत्र पृथ्वी के ग्रह होते हैं। अत्यधिक दूरी होने के कारण जिन नक्षत्रों का पृथ्वी पर प्रभाव नहीं पड़ता। वे पृथ्वी के नक्षत्र नहीं हैं। अन्य नक्षत्रों का दूसरे लोकों पर प्रभाव पड़ता होगा, वे नक्षत्र उन लोकों के लिये नक्षत्र हो सकते हैं।

ग्रह प्रकोप भी विज्ञान है:- चन्द्रमा जल तत्व का स्वामी है। चन्द्रमा की उत्पत्ति भी जल से बताई जाती है। जलीय भाग पर इसका प्रभाव अवश्य पड़ता है। मनुष्य के शरीर में जलीय भाग 75 प्रतिशत है। मनुष्य के शरीर पर इसका प्रभाव अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। सुनने में आता है कि डूबकर आत्महत्या की घटना पूर्णिमा के दिन ही अधिक होती हैं इसमें चन्द्रमा के साथ मंगल ग्रह का भी सम्बन्ध है क्योंकि मंगल ग्रह पृथ्वी तत्व का स्वामी है। मानव शरीर में दोनों ही तत्व मौजूद है। मनुष्य शरीर में चन्द्रमा का मन से सम्बन्ध है और ठोस पदार्थ (हाड़, मांस, मज्जा) आदि से मंगल का सम्बन्ध है।

ग्रहों का रंग :- भगवान के बनाये हुए विश्व में अनेक ब्रह्माण्ड है। अनेक ब्रह्मण्ड़ों की सत्ता विज्ञान भी मान रहा है। सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु, ब्रह्माण्ड़ों में है जो कि एक-दूसरे के आकर्षण से यथास्थान स्थित है। यह ब्रह्माण्ड अथवा ग्रह रंगों से युक्त हैं, जैसे पृथ्वी का रंग पीला बताया गया है। उसी प्रकार सूर्य का रंग जपाकुसुम के समान रक्तवर्ण है। सिन्दूर के समान उनके आभूषण और वस्त्र हैं। दूध के समान श्वेत वर्ण चन्द्रमा का है। मंगल का रंग अग्नि के समान है। बुध ग्रह का रंग हरा है, बृहस्पति का रंग पीला तथा शुक्र श्वेत वर्ण है। शनि का रंग काला, राहु का रंग भी काला तथा केतु धुएँ के समान होता है।

मनुष्य के शरीर में योग साधना के अनुसार चक्र होते हैं चक्र भी रंगों से युक्त माने गये हैं। मनुष्य का शरीर रंगों से घिरा हुआ है। चिकित्सा विज्ञान में भी रंगों का प्रभाव देखने में आता है अनेक रंगों के बोतलों में जल भरकर सूर्यतापी बनाते हैं फिर कई प्रकार के रंगों का उस जल से उपचार किया जाता हैं।

रत्न धारण भी विज्ञान हैं :- भारत के ऋषि-मुनियों ने रत्न-विज्ञान की खोज की थी। इसका सम्बन्ध ग्रहों से और रंगों से भी है। नौ ग्रह है जो ऊपर बताये गये हैं और मुख्य रत्न भी नौ है (हीरा, पन्ना, मोती, माणिक, पुखराज, नीलम, लहसुनिया, गोमेद, मूंगा)। रत्नों के द्वारा मनुष्य को रंग से होने वाला लाभ भी प्राप्त होता है। आयुर्वेद विज्ञान के अनुसार रत्नों की रसायन या भस्मी बनाकर अनेक रोगों का उपचार किया जाता है। अतः मनुष्य शरीर पर रत्नों के स्पर्श और घर्षण का भी प्रभाव होता है।

ज्योतिष विद्या से भी भारत में अनेक प्रकार की खोज की गयी। ज्योतिष विद्या सत्य है। इसका जीता जागता प्रमाण है, सूर्य और चन्द्र ग्रहण पंचांगों में दशकों वर्ष पूर्व ही भविष्य में होने वाले ग्रहण को लिख दिया जाता है। मनुष्य के शरीर, मन और ग्रह तथा रत्नों के सम्बन्ध पर भी ज्योतिष ने बहुत खोज की, फिर अनुभव किया गया। कोई रोग होता है तो उसकी औषधि भी होती है। ग्रहों का प्रकोप होगा तो उसका औषधि रत्न भी है। ग्रह अकाश में है, को रत्न पृथ्वी पर हैं ग्रहों का रंग पृथ्वी पर है। ग्रह रंग वाले हैं तो रत्न भी रंगीन हैं।

मानव शरीर के रंग से इसका कैसे तालमेल बैठाया जाये। ज्योतिष ने इसका निदान कर लिया और उपचार बतलाया। मनुष्य के शरीर में जिस ग्रह, प्रकोप से जिस

रंग की कमी आ गयी हो, उसकी पूर्ति करने के लिये उस मालिक ग्रह के अनुसार रंग वाला नग धारण कराया जाये। जन्म के नाम से राशि बनती है। जन्म के नाम का पता न हो तो बोलचाल के नाम से भी राशि की जानकारी हो जाती है। राशि जानने की विधि नाम के पहले अक्षर से जानी जाती है। जेसे मोहन सिंह में 'म' प्रथम अक्षर है। सिंह राशि में (म, मू, मे, मो, मी, टा, टी, टू, टे) अक्षर होते हैं। अतः मोहन की सिंह राशि का स्वामी सूर्य ग्रह है। इसी प्रकार सूरजसिंह की राशि कुम्भ होगी। इस राशि का स्वामी शनि है। सूर्य वाले को माणिक, शनि वाले को नीलम की सलाह दी जायेगी।

विद्वानों की मान्यता है कि माणिक,मुक्ता, विद्रुम पन्ना, पुखराज, हीरा, नीलम, गोमेद और लहसुनिया इन प्रधान नवरत्नों की उत्पत्ति क्रमशः सूर्य चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु इन प्रधान नवग्रहों की पृथ्वी के सतत् प्रधान स्थानों पर सीधी किरणों के पड़ने के प्रभाव से उन ग्रहों में विद्यमान विशेष तत्वों से होती है। यही कारण है कि जैसा जिस ग्रह का रंग होता है। उस ग्रह से सम्बन्धित रत्न को भी वैसा रंग प्राप्त होता है। इसी कारण इन रत्नों में उन ग्रहों की विशेष शक्ति सम्मिलित रहती है जो कि समय पर रत्नादि के धारण या सेवन द्वारा दुःख आदि के होने से स्पष्टतया अनुभव में आती है। इससे यह स्पष्ट सिद्ध हो जाता है कि पृथ्वी में उत्पन्न होने वाले इन पत्थरों (रत्नों) का भी मानव जीवन में प्रभावशाली उपयोग होता हैं।

सच्चे का बोलबाला, झूठे का मुंह काला :- रत्नों में दैव्य शक्ति, है। यह प्रत्यक्ष देखा गया है रत्न सर्व साधारण को उपलब्ध भी नहीं हैं। हो भी जायें तो उस पर ठहरते नहीं है, कोई भी माटी के मोल उनसे ले लेता है। श्रीमान्, सज्जनों के पास ही रत्न का निवास होता है। इन वस्तुओं के क्रेताओं को जो नकली वस्तुएँ धोखा देकर देगा वह बहुत बड़े पाप का भागी होगा। इस पाप का फल न मालूम भोले बाबा क्या देंगे? इसलिए इन वस्तुओं के क्रय-विक्रय में सदा सावधानी बरतनी चाहिए। धोखा देकर शीघ्र ही धनवान होकर वर्तमान में भले ही प्रसन्न हो जायें, परन्तु इसका परिणाम दुःख ही होगा। मेरी अपनी जानकारी में मैंने किसी को नकली वस्तु नहीं दी। भविष्य में भी भगवान शंकर जी से प्रार्थना है कि बुद्धि को सदा सचेत रखें, जिससे धोखा देकर पैसा कमाने की बात पैदा न हो जिन्होंने बेईमानी से शीघ्र ही धनाढ्य होने की बात सोची उनको बर्बाद होते भी इन आँखों ने देखा है। इसलिए पुनः प्रार्थना है कि भगवान शिव सदा सद्बुद्धि बनाये रखें।

मेरा अनुभव :- इस पुस्तक से रत्न सम्बन्धी आपको काफी जानकारी मिलेगी। इसको पढ़कर अपनी कठिनाइयों का हल करने का उपाय भी जान सकते हैं। ग्रहों का प्रकोप न होने पर भी आप अपनी राशि के अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं। वह आपको हानि नहीं पहुँचायेगा, बल्कि उसका लाभ ही होगा।

मैं अपने अनुभव के आधार पर निर्द्वन्दता से कह सकता हूँ कि मेरा भाग्य तो पत्थरों ने ही बदल दिया किसी समय में मैं एक छोटे से शो-केश में नग जड़ित अंगुठियाँ घूम-घूमकर बेचा करता था। अंगूठी बेचने के लिये हरिद्वार से बाहर मेरठ आदि अन्य नगरों में भी जाना होता था। उन नगों की अंगुठियों से बढ़कर धीरे-धीरे मैं राशि के पत्थर बेचने लगा। भगवान भोले नाथ की कृपा से अब मैं पत्थरों से रत्न बेचने लगा।

आज बाजार से अलग 27 सीढ़ियाँ चढ़ने के उपरान्त सन्तल सराय (मकान) की तीसरी मन्जिल पर शोरूम लेकर बैठा हुआ हूँ। इसी मन्जिल पर मेरा निवास भी है। ग्राहक के रूप में भगवान यहीं दर्शन देते रहते हैं। यह पत्थर का प्रभाव और भोले शंकर की कृपा है। आपसे विनम्र निवेदन है कि एक बार 'शिव रत्न केन्द्र' सन्तल सराय, तीसरी मंजिल गऊघाट, हरिद्वार पर पहुंचकर अवश्य दर्शन दें।

विनीत- शिवदास मूलचन्द खत्री

卐 ॐ नमः शिवायः 卐

रत्नों की उत्पत्ति

प्रकृति के गर्भ में न मालूम क्या-क्या छिपा हुआ है। भूमि के ऊपर कहीं बर्फ पड़ी है, कहीं भिन्न-भिन्न पत्थरों के पहाड़ हैं और कहीं पर विभिन्न प्रकार की मिट्टी ने भूमि को ढका हुआ है। पृथ्वी के नीचे से गरम पानी निकल रहा है, उसी के निकट ठण्डा जल भी है। किसी स्थान में भूमि तल को चीर कर धुआँ, राख, कोयले की वर्षा हो रही है जिसको ज्वालामुखी कहते हैं और किसी जगह निरन्तर अग्नि की लपटें निकल रही हैं। जो भी वस्तु पृथ्वी से बाहर निकल आती है, उन्हें आँखे देख लेती हैं, परन्तु जो भूमि के अन्दर पड़ी हैं उन्हें हम जानते ही नहीं हैं। पृथ्वी में निरन्तर क्रिया भी चलती रहती है। जैसे शरीर के अन्दर रक्त का दौरा होता रहता है। पेट के अन्दर पाचन क्रिया हो रही है। परन्तु हम उसे अपनी आँख से देख नहीं पा रहे हैं। भूमि के अन्दर चलने वाली क्रिया से उसके अन्दर में पड़ी हुई वस्तुओं में परिवर्तन होता रहता है। अनेक प्रकार के पत्थर, कोयला, आदि मूल्यवान जवाहरात के रूप में बदल जाते हैं।

जिन्हें हम रत्न या जवाहरात कहते हैं, उनमें से हीरा, पन्ना, गोमेद समतल भूमि की खादान्नों में पाये जाते हैं। नीलम, पुखराज, हिमालय पर्वत की खादानों से प्राप्त होता है। लहसुनिया, माणिक नदियों या उसके किनारे के खेतों में मिल जाते हैं। मूंगा, मोती, समुद्र से निकाले जाते हैं। इसी प्रकार इसके जो उपरत्न होते हैं, वह भी नदी, समुद्र, पर्वतीय या समतल भूमि की खादानों में निकलते हैं।

जिस समय यह रत्न खान या समुद्र से निकलते हैं, तब यह साधारण कंकड़, पत्थर की शक्ल में होते हैं। बेडौल दशा में किसी भी प्रकार की चमक से रहित होते हैं। बिना चमक और बेडौल होते हुए भी पारखी लोग इन्हें पहचान लेते हैं कि यह

पत्थर कौन सा रत्न है और किस क्वालिटी का है। फिर भी इन रत्नों की सही पहचान इनके तराशने पर होती है। मशीनों पर ले जाकर इस बेडौल पत्थर को तोड़ा जाता है। इनके अनेक छोटे-बड़े टुकड़े हो जाते हैं। कारीगर लोग अधिक से अधिक बड़ा अदद बनाने की कोशिश करते हैं। फिर भी कुछ टुकड़े हो जाते हैं। इन छोटे टुकड़ों को साफ सुथरा बनाया जाता है तथा सफाई का अन्तिम रूप (फिनिशिंग) किया जाता है। फिनिशिंग के बाद ही उनकी चमक तथा क्वालिटी का सही ज्ञान होता है। एक कहावत है- बन्द मुट्ठी लाख की खुल जाये तो खाक की, अर्थात् पत्थरों को खान से निकालने पर तो लगता है काफी मूल्य की वस्तु निकल आयीं, परन्तु तराशने पर उसमें से बहुत से टूट-फूट जाते हैं, चूरा हो जाता है।, छोटे-बड़े अदद हो जाते हैं। इनकी चमक और क्वालिटी क्या हैं? यह सब जानकारी होने के बाद इनका मूल्यांकन किया जाता है।

सर्वसिद्धि यन्त्र

- श्री यन्त्र श्री (यश) तथा लक्ष्मी प्राप्ति के लिए। (केवल श्री यन्त्र चांदी में)
- श्री महालक्ष्मी यन्त्र दर्शन मात्र से घन, मान और ऋद्धि-सिद्धि प्राप्ति के लिए।
- श्री दुर्गा यन्त्र विशेष संकट निवारण हेतु।
- श्री बीसा यन्त्र भूत, प्रेत, व्याधि हटाने के लिए।
- श्री मंगल यन्त्र-शादी-विवाह तथा शुभ कार्यों में आये हुए विघ्नों को हटाने के लिए।
- श्री बंगलामुखी यन्त्र-मुकदमा या शत्रुओं पर विजय प्राप्ति हेतु।
- श्री कुबेर यन्त्र-धनपति बनने के लिए।

धन्धा यन्त्र, नवग्रह शान्ति, शंकर यन्त्र, अनेक प्रकार के लगभग 150 किस्म के यन्त्र, तांबा, पंचधातु, लोहा आदि अनेक धातुओं में और भिन्न-भिन्न साइज 4 इन्च से 5 फुट तक के यन्त्र हमारे यहां से मिल सकते हैं। जिसका मूल्य तांबे में लगभग 21/–, 31/–, 51/–, 105/–, 151/–, 251/–, 525/– रुपये हैं। अथवा अपना नक्शा और साइज देने पर यन्त्र विशेषज्ञ पण्डित एवं कारीगरों द्वारा निर्माण भी कराया जा सकता है।

卐 ॐ नमः शिवायः 卐

रत्नों की पहचान

"हीरे की परख तो जौहारी ही जाने"

कहावत प्राचीन काल से चली आ रही है। जवाहरात भूमि के गर्भ से तैयार होते हैं। भूमि को खोदकर खादानों से निकाले जाते हैं। प्रकृति के गर्भ में वृद्धि पाने वाली कोई भी वस्तु एक समान नहीं हुआ करती क्योंकि कोई वस्तु अपने मूल को पकड़े रहने तक वृद्धि की ओर ही अग्रसर रहती है, प्रकृति के अन्दर एक प्रकार की ही अनेक वस्तु होने पर भी सब की आयु काल अलग है। जो पत्थर आदि वृद्धि की ओर हैं, उनकी आयु के हिसाब से भिन्न-भिन्न प्रकार के जोड़ बनते चले जाते हैं। जब हम गढ़े हुए पत्थरों को जिनको (जवाहरात) कहते हैं। देखेंगे तो उनमें कुछ दाग, धब्बे या धारी दिखाई देगी। उन चिन्हों को देखकर रत्न ज्ञान से अनभिज्ञ व्यक्ति उसे नकली समझेगा क्योंकि उनके सोचने का तरीका तो भिन्न होगा, इतनी मूल्यवान वस्तु तो अवश्य ही साफ-सुथरी चमकदार ही होनी चाहिये। अपने इन विचारों में डूबा व्यक्ति रत्न जैसा बने हुए काँच को असली मान बैठता है और अपनी सोच के आधार पर ही ठगा जाता है। इसीलिए कहावत बनी है-

हीरे की तरख तो जौहरी ही जाने :-

वर्तमान युग तो वैज्ञानिक युग है। सभी प्रकार की टैस्टिंग मशीनें बन गयी हैं। देश के कुछ नगरों में लगायी गयी है, परन्तु बहुत ही कम तादाद में है। जवाहरात के व्यापारी लगभग प्रत्येक नगर में होते हैं। सभी नगरों में टैस्टिंग मशीनों पर पहुँचना बहुत ही कठिन है। यदि आप जाँच कराने मशीन तक पहुंच भी जायें तो वह पत्थर खादान से निकला हुआ असली है या काँच से बना हुआ नकली है, मशीन केवल यही बता सकेगी, परन्तु रत्न और उपरत्न सैकड़ों की गिनती में है, उसका नाम तो मशीन नहीं बता सकेगी।

पहले समय में आयुर्वेदिक चिकित्सक रोग का निदान नाड़ी ज्ञान से करते थे, अब एलोपैथिक वालों की देखादेख वैद्य भी रोग का निदान यन्त्रों से करने लगे हैं। इसलिये नाड़ी ज्ञान प्रायः लुप्त होता चला जा रहा है। आज के वैदिक पढ़े हुए तो उस

नाड़ी ज्ञान को ही नकार रहे हैं, कह रहे हैं- नाड़ी की धीमी,मन्द या तीव्र गति से रोग नहीं जाना जाता था, मरीज से पूछ-पूछ कर अनुमान से ही रोग का पता पुराने लोग किया करते थे। इसी प्रकार आज रत्नों की परख करने वाले भी प्रायः लुप्त होते चले जा रहे हैं, पूरे देश में ही कुछ गिने-चुने रह गये हैं। नये विक्रेताओं को अपने पर पूरा भरोसा नही है, वह स्वयं भी मशीनों पर निर्भर है। मशीन हर जगह उपलब्ध नहीं है। ऐसी दशा में नये पारखी जो कुछ बतायेंगे वह क्या होगा? आप स्वयं विचार करके देखें। जो स्वयं अंधेरे में है, वह दूसरों को प्रकाश में कैसे ले जायेंगे। आज के समय में तो नकल की भरमार है। प्रत्येक वस्तु की नकल बनाकर मनुष्य रातों-रात करोड़पति या अरबों का मालिक बनने की होड़ में दौड़ा जा रहा है।

जवाहरात के सम्बन्ध में भी यह बात लागू है। काँच तथा कैमिकल के द्वारा एक से एक अच्छे नग बनाकर तैयार किये जा रहे हैं। उनके ऊपर सुन्दर, आकर्षक पॉलिश भी दिखाई देती है। इस प्रकार के नगों को बेचेने वालों के पास बातें भी बड़ी लुभावनी होती है। कभी-कभी तो ऐसे विक्रेता अपनी कुछ मजबूरियाँ बताकर सस्ता देने की भी बात करते हैं। क्रेता उसकी मजबूरी की बात सुनकर विश्वास कर लेता है, और उस रत्न को अमूल्य समझकर कम मूल्य में प्राप्त हुआ मान बैठता है। तब तक उस रत्न को देखकर प्रसन्न भी होता रहता है जब तक कि कोई उसके विश्वास का पारखी न मिले, परन्तु जब उसे नकली होने का विश्वास हो जाता है तब अपनी ना समझी पर पश्चाताप ही करता हैं।

रत्नों के सम्बन्ध में कहा जाता है कि इनमें दैवी शक्तियों का प्रभाव भी होता है। इस प्रकार की वस्तु को कोई विक्रेता धोखा देकर बेचता है तो वह पैसा उसे फलीभूत भी नहीं होगा। इस प्रकार के विक्रेताओं को कुछ ही दिनों में झोली डण्डा उठाकर भागते ही देखा है या फर्मों के नाम बदलते रहते हैं। इससे क्रेता को यह शिक्षा लेनी चाहिए कि जो पुराने समय से एक ही नाम से दुकान और एक ही विक्रेता बैठता हो उसी से रत्नों के सम्बन्ध में परामर्श करें और खरीदे ताकि आपके दुबारा आने पर भी वह आपको मिल सके।

निवेदक :

शिवदास मूलचन्द खत्री

卐 ॐ नमः शिवायः 卐

रत्नों के बाजार में नये पारखी, कहाँ से व कैसे आये?

प्रिय पाठकों, सर्वविदित है कि बिना गुरु के ज्ञान मिलना असंभव है जिस प्रकार छोटा बच्चा शिक्षा का ज्ञान प्राप्त करने के लिये सर्वप्रथम प्राइमरीपाठशाला में अपने गुरु के शरणागत होता हुआ, शिक्षा के सम्बन्ध में ज्ञान प्राप्त करता है, उसके लिये उस बच्चे को कई वर्षों तक अपने गुरु की शरणागत रहकर शिक्षा का अध्ययन करना पड़ता है। तद्परान्त बच्चा कुछ ज्ञान प्राप्त करता है। इसी ज्ञान के कारण वह संसार में सभी भाषाओं का अध्ययन करके सर्वोच्च पद का अधिकारी बनता है। मात्र किताबों में ज्ञान जो छिपा है उसका मार्ग दर्शन करने के लिये उसके गुरु ने उसके साथ जो मेहनत व लग्नशील कार्य करके मौलिक ज्ञान की ज्योत जलाई है। इस कारण बालक का भविष्य प्रकाशमय बनता चला जाता हैं।

परन्तु अब कलयुग में सब कुछ उपरोक्त से कई गुना स्थिति बदल चुकी हैं संसार में प्रत्येक मनुष्य तरह-तरह की कल्पनाओं तथा अन्य किसी भी तरीकों के माध्यम से सर्वोच्च ज्ञान प्राप्त करना चाहता है क्योंकि वह स्वयं स्वामी बनकर सबकुछ भूलने लगता है, यह सब उनकी व्यवहारिक संगत का प्रभाव माना जायेगा। आज बाजार में एक से बढ़कर एक सुन्दर आकर्षित कवर लगी ज्ञान की पुस्तकें उपलब्ध हैं जिसको यह बेचारे असली ज्ञान मानकर उसको पढ़ते हैं उसी के आधार पर कार्य भी करते रहते हैं। आज बाजार में राशि रत्न, जवाहरात एवं रुद्राक्ष के महात्म्य से सम्बन्धित पुस्तकें मिल जाती हैं। उन्हीं को पढ़कर कई लोगों ने बाजार एवं घरों में दुकाने व शोरूम खोल लिये हैं। कई बड़े शहरों की गली-गली में रत्नों के शोरूम आपको देखने को मिलेंगे। परन्तु इनमें लगभग ज्यादातर बिना गुरुज्ञान के मालिकों के शोरूम हैं जो कि बाजार में मिली किताबों को पढ़-पढ़कर ज्ञानी बने बैठे हैं। किताबों से केवल मनुष्य में मार्गदर्शन जैसा ज्ञान मिलता है। असली-नकली की पहचान बिना किसी अनुभव के प्राप्त नहीं की जाती। रत्न, जवाहरात एवं रुद्राक्ष की विशेष जानकारी के लिये मनुष्य को कम से कम 25—30 वर्ष का अनुभव होना अति आवश्यक है, क्योंकि अनुभव करने में मामूली समय नहीं लगता। जिस प्रकार माली वृक्ष लगाने के पश्चात् वृक्ष पर फल लगने तक प्रतिक्षा में समय व्यतीत करता है। उसी प्रकार हर कार्य के अनुभव प्राप्त करने के लिए समय लगाना पड़ता है। आज राशि-रत्न एवं रुद्राक्ष के कार्य में जितनी धोखाधड़ी व नकली असली की बातें पैदा हुई, वह सब इन्हीं कारणों से उत्पन्न हुई है। बड़े-बड़े महानगरों में जहां राशि रत्नों का व्यापार मण्डी

के रूप में कार्य किया जाता है। वहां पर भी भारी मात्रा में कांच के नकली रत्न तैयार किये जाते हैं, वहीं से जब काँच के रत्न बनाकर-बनाकर सुन्दरता एवं उन पर पॉलिश आदि करके बाजारों में बेचे जाते हैं। इन बाजार के नये शोरूम वालों को इसका ज्ञान है ही नहीं तो वे नकली को असली समझकर खरीदते एवं बेचते हैं। ग्राहक भी इसी गुमराह में आज परेशान हुआ घूमता फिरता है। कई ग्राहकों ने हमारे से भी इसी प्रकार के सवाल किये कि हमें चमकदार रत्न चाहिए। रत्न कभी चमकदार नहीं होते। हमने उनको समझाया तो फिर उन्होंने कांच के बने रत्न जो बाजारों से खरीदे गये थे, वह हमें दिखलाये तो देखने पर पता चला कि वह तो कांच के बने नकली रत्न है। ग्राहक अपनी नासमझी पर खेद करता हैं। राशिरत्न ईश्वर की देन है। इसमें जाला आदि होना प्रमुख एवं प्राकृतिक गुण है। राशि के पत्थर समतल भूमि व हिमालय पर्वतों की खादानों से प्राप्त होते हैं। मूंगा, मोती समुद्र में उत्पन्न होते हैं। इसलिए रत्न रुद्राक्ष आदि धारण करने के लिये किसी पुराने अनुभवी पारखी से सलाह एवं खरीददारी करनी चाहिये। जो मनुष्य खुद अन्धकार में डूबा हो, वह दूसरों को उजाले में कैसे ले जा सकता है, आज के समय में प्रत्येक मनुष्य की करनी व कथनी में बहुत जबरदस्त अन्तर आ गया है। हमने राशि रत्न एवं रुद्राक्ष के सम्बन्ध में जो 45 वर्ष में अनुभव प्राप्त करके कामयाबी हासिल की है, उसके पीछे हमारी ईमानदारी, निःस्वार्थ सेवा एवं भगवान भोलेनाथ का आशीर्वाद रहा। आज तक हमने जो भी अपनी सलाह से राशि रत्न पहनायें हैं, उनसे काफी लोगों को लाभ ही पहुंचा। आगे भी भोलेनाथ से करबद्ध प्रार्थना है कि हमें सदा सद्बुद्धि दें।

हमें खेद (दुःख) है केवल इस बात का कि हमने 45 वर्षों में जो बड़ी मेहनत व अनुभव इन राशि के पत्थरों से प्राप्त किया, उसको आज कुछ मुट्ठीभर स्वार्थी व अज्ञानी रत्न विक्रेताओं ने अपने उस अज्ञान के कारण नकली रत्नों को असली रत्नों के नाम से बाजार में बेचकर हमारे और आपके आत्मविश्वास पर हमला करते रहते हैं। अगर इन लोगों का यह सिलसिला इसी प्रकार चलता ही रहा तो एक दिन ऐसा भी हो सकता है कि असली रत्न आपको धारण करने की जगह दिखाई देने भी मुश्किल पड़ जायेंगे।

हमारा सभी रत्न धारण करने वाले प्रेमियों से अनुरोध है कि रत्न धारण करने के लिये किसी पुराने से पुराने लगभग 25—30 वर्ष के अनुभवियों की सलाह द्वारा ही रत्न धारण करना चाहिए। अधिक जानकारी करने के लिये आप श्री प्रकाशेश्वर महादेव रत्न शोरूम, कुठाल गेट, शिवपुरी, मसूरी रोड़ देहरादून अथवा शिव रत्न केन्द्र (रजि०) गऊघाट हरिद्वार पर सम्पर्क करें या स्वयं मिलें।

शिवदास मूलचन्द खत्री

卐 ॐ नमः शिवायः 卐

हीरा

हीरे को संस्कृत में वज्र, फारसी में अल्मास और अंग्रेजी में इसे डायमण्ड (Diamond) कहते हैं।

वर्तमान युग में हीरे का स्थान रत्नों में सर्वोपरि है। विशेषता यह है कि यह सबसे अधिक चमकदार होता है। शरीर के पसीने से इसकी चमक खराब नहीं होती है। अन्य मोती आदि खराब हो जाते हैं।

सब रत्नों से अधिक कठोर हीरा होता है। इसकी उत्पत्ति के सम्बन्ध में बताया जाता है कि हीरा कोयले से बनता हैं पृथ्वी तल में सदा परिवर्तन होता रहता है, जिसे हम देख नहीं पाते। मिट्टी की अनेक किस्में होती हैं, चिकनी मिट्टी बनने के बाद उसमें कंकड़ पैदा होता है। इसी तरह अन्य किसी प्रकार की मिट्टी के पत्थर से कोयला बनता हैं यह कठोर कोयला ही पृथ्वी में पड़े-पड़े कभी हीरे का रूप धारण कर लेता है। कोयले से हीरा बनने की पृथ्वी तल में होने वाली प्रक्रिया में लाखों वर्ष लग जाते हैं। इसकी उत्पत्ति विशुद्ध कार्बन परमाणुओं पर एक विशिष्ट मानक तापक्रम पर भारी दबाव पड़ने से होती है। (कोयले से उत्पत्ति होने के कारण हीरे के अन्दर कुछ तालिका लिये हुये धारियाँ होती हैं) हीरा कठोर होने के कारण किसी अन्य धातु से खुरचा नहीं जा सकता, परन्तु अपनी कठोरता के कारण टूट भी जल्दी जाता है। हीरे के समान्तर (तल) तह बनी होती है। उन तलों से यह चीरा जाता है। हीरा कठोर होने के कारण किसी अन्य धातु से क़ाटा नहीं जा सकता। सर्वप्रथम भारतीय रत्न निर्माताओं ने ही हीरे के टुकड़े से हीरे को घिसकर अच्छी बनावट के नग बनाने की पद्धति का आविष्कार किया था। आज उसका ही विकसित रूप बेल्जियम का बना हुआ ब्रिलियन्ट-कट (Brilliant-Cut) के नाम से प्रसिद्ध है।

हीरा पृथ्वी तल में खानों को खोदकर निकाला जाता है। खानों (खदानों) से निकाल कर विभिन्न आकारों में इसे काटा और तराशा जाता है, इसके पश्चात् हीरे पर पॉलिश की जाती है। हीरे की कटिंग और पॉलिश के लिये बेल्जियम का नाम सर्वोपरि है। वर्तमान समय में यहां का हीरा आठ तिकोनी पहलुओं में बनाया जाता है। भूतकाल में तो भारत में हीरे का प्रसिद्ध इतिहास रहा है, विश्व विख्यात कोहिनूर

हीरा भारत में ही पैदा हुआ था। उस हीरे को लगभग ५५०० वर्ष पूर्व किसी राजा ने धर्मराज युधिष्ठर को भेट में दिया था। समयानुसार यह अनेक राजा और बादशाहों पर होता हुआ राजा रणजीत सिंह के पास पहुँचा। उन्होंने ब्रिटिश शासनकाल में अंग्रेजों को दे दिया। उस हीरे के दो टुकड़े कर एक बादशाह के ताज और एक सिंहासन में लगा दिया गया था। लन्दन में आज भी मौजूद है। इस हीरे के समान बड़ा और मूल्यवान हीरा आज तक दूसरा पैदा नहीं हुआ।

हीरा रत्नों का राजा है। खनिज पदार्थ में रत्न वे कहलाते हैं, जिनमें तीन विशेष गुण हों- सुन्दरता, टिकाऊपन और दुर्लभता प्राप्त होने में। नेत्र के लिये सुन्दर लगना रत्न के लिये पहला गुण है परन्तु सुन्दर होने पर जो शीघ्र ही टूट-फूट हो जाये, बिखर जाये, वह वस्तु संग्रह करने योग्य नहीं हैं। परन्तु सुन्दर भी हो और टिकाऊ भी हो और आसानी से सबकों मिल जाये। सबको उपलब्ध होने के कारण वस्तु का महत्व नहीं रह जाता है। उस वस्तु को संग्रह करने की इच्छा नहीं रह जाती।

कौटिल्य के प्रसिद्ध अर्थशास्त्र ग्रन्थ में हीरे का विस्तार से वर्णन किया है। उत्पत्ति स्थान के अनुसार हीरों के भिन्न-भिन्न नामों का रोचक वर्णन अर्थशास्त्र में मिलता है। कौटिल्य ने हीरे आदि प्रमुख रत्नों को राज्य के कोष अथवा दूसरे शब्दों में राज्य का मुख्य आधार ही बताया है। वह लिखते हैं :-

आकार प्रभवः कोषः कोषक दण्ड प्रजायते ।
पृथ्वी कोषद दण्डाभ्यां प्रप्यते कोष भूषणा ॥

राजा का कोष खनिजो से भरता है, कोष होगा तो सेना होगी और जब सेना होगी तो उसी के द्वारा राज्य की प्राप्ति तथा उसकी रक्षा होगी।

हीरे का रंग : पीली आभा लिये हुए हीरा कम मिलता है। भूरे बादामी रंग का हीरा होता है, जिसका मिलना ही दुर्लभ है। अधिकांश लाल या गुलाबी हीरे मिलते हैं।

आयुर्वेद में हीरा : हीरे के अन्य रंग बताये गये हैं, अत्यन्त सफेद, कमलासन, वनस्पति समान हरे रंग का गेंदे के समान बसन्ती रंग का और नीलकण्ठ के पक्षी के समान नीले रंग का, श्याम, तेलिया पितहरा। जो हीरा आठ कोण या धार वाला होता है अथवा छह कोण का तेज युक्त इन्द्र धनुष के समान प्रकाशवान वह पुरुष जाति के लिये लाभदायक होता है।

जो हीरा लम्बा, चपटा और गोल होता है वह स्त्री जाति के लिये गुणकारी है, हीरा रसायन के लिये उपयोग तथा सर्व सिद्धियों का प्रदाता है। रोगों को नष्ट करके स्वस्थ बनाने वाला होता है।

हीरे की भस्म आयु, पुष्टि, बल, वीर्य शरीर का सुन्दर वर्ण तथा काम सुख की वृद्धि कराता हैं हीरा भस्मी के सेवन करने से सम्पूर्ण रोग नष्ट हो जाते हैं

ज्योतिष में हीरा : शुक्र ग्रह के कुपित होने से व्यक्ति को श्लोष्मिक पाण्डु, काम शक्ति दौर्बल्य, मूत्रकृच्छ तथा गुप्त यौन रोग उत्पन्न हो सकते हैं। शुक्र ग्रह कारक रोगों से ग्रसित व्यक्ति को हीरा धारण करना चाहिए।

हीरे के धारण से लाभ : हीरा शुक्र ग्रह का रत्न होता है जो लोग हीरे को धारण करते हैं उनके चेहरे पर हर समय खीली हुई मुस्कान रहती है, झुंझलाहट और परेशानी उनके निकट नहीं आती। जीवन की दिनचर्या व्यवस्थित रहती है। इसके धारण करने से दाम्पत्य जीवन सरल हो जाता है। शरीर के अनेक रोगों पर भी हीरे की पकड़ है। जो लोग शरीर से कमजोर हैं, उनके लिये औषधि का काम करता है। इसके धारण करने से शरीर में शान्ति आती है। मानसिक, दुर्बलता समाप्त होती है। नवीन चेतना का संचार होता है, प्रभाव में वृद्धि होती है। जीवन में जो विशेषतायें होनी चाहिये अचानक मनुष्य में आने लगती हैं।

धारण विधि : हीरा कम से कम 30 सेन्ट का धारण करना चाहिए इससे अधिक वजन का धारण करना और भी उत्तम है। इस रत्न को चाँदी की अँगूठी में जड़वाकर अपने इष्टदेव का स्मरण कर तथा इष्टदेव के चरणस्पर्श कर धारण करना विशेष प्रभावशाली होता है।

नोटः- शिव रत्न केन्द्र पर हीरे की भस्मी भी मिलती है।
हीरे के उपरत्न, स्फटिक की मालायें भी उपलब्ध हैं।

हीरे का मूल्य प्रति 30 सेंट

(साइज धूली मूंग की दाल के बराबर)

सुपर क्वालिटी	स्पेशल क्वालिटी	I क्वालिटी	II क्वालिटी
6,000/– रु0	4,000/–रु0	2,000/–रु0	1,000/–रु

महत्वपूर्ण मालायें

(हर प्रकार के रत्नों एवं उपरत्नों की मालायें)

स्फटिक की माला	रतवे की माला	रुद्राक्ष मोती माला
मूंगे की माला	नौरत्न की माला	शंख की माला
पन्ने की माला	तुलसी की माला	मुण्ड माला
नीलम की माला	औनेक्स की माला	टाइगर की माला
पुखराज की माला	मरगज की माला	क्रिस्टल माला
गोमेद की माला	कैरवे की माला	फीरोजा माला
लहसुनिया की माला	बेल्जियम की माला	बैंत के फूल की माला
माणिक की माला	एमीथीज की माला	चन्दन की माला
सफेद चन्दन की माला	सर्प की माला	लाल चन्दन की माला
लाजवर्त की माला	अम्बर की माला	मून स्टोन माला
सच्चे मोती की माला	हकीक की माला	स्फटिक तुलसी माला
दाना फिंग की माला	गनमैंटल की माला	ब्लेक स्टार की माला
यशव की माला	हल्दी की माला	नीली की माला
तांत्रिक की माला	कुमकुम की माला	धुनैले की माला
पुत्रजीवा की माला	रतियों की माला	रुद्राक्ष, मोती, मूँगा की माला
सुनहले की माला	कन्नेर की माला	नजर बट्टू की माला
गारनेट की माला	वैजन्ती माला	स्फटिक और रुद्राक्ष की माला
कमल गट्टे की माला	भवर की माला	रुद्राक्ष और हकीक की माला
उपरत्नों की माला	मैगनेट माला	रुद्राक्ष स्फटिक मोती माला
सीप की माला	रेडियम माला	रुद्राक्ष और मूंग की माला
		रुद्राक्ष और गारनेट की माला

नोट :- अन्य हर प्रकार के उपरत्नों की माला भी उपलब्ध है।

卐 ॐ नमः शिवायः 卐

माणिक

माणिक के नाम- संस्कृत में माणिक्य, पद्मराग, कुरविन्द आदि हिन्दी में- माणिक, जमुनिया, उर्दू में-याकूत, अंग्रेजी में (Ruby) इत्यादि पौराणिक कथाओं के अनुसार-दैत्यराज बलि पर विजय प्राप्त करने के लिये विष्णु भगवान ने वामन अवतार धारण किया और उनके दर्प का चूर्ण किया। इस अवसर पर भगवान के चरण स्पर्श से बलि का सारा शरीर रत्नों का बन गया। तब देवराज इन्द्र ने उस पर वज्र का प्रहार किया। वज्र की चोट से बलि के शरीर के टुकड़े-टुकड़े हो गये। उन रत्नमय टुकड़ों को भगवान शिव ने अपने त्रिशूल पर धारण कर लिया और उसमें नवग्रहों तथा बारह राशियों के प्रभुत्व का आघात करके पृथ्वी पर फेंक दिया। पृथ्वी पर गिराये गये इन खण्ड़ों में से ही विविध रत्नों की खाने पृथ्वी के गर्भ में बन गयी। भगवान शंकर के द्वारा फेंके गये खण्डों में से ही 84 प्रकार के रत्न (पत्थरों) माणिक आदि रत्नों के सम्बन्ध में पुराणों में अनेक कथायें लिखी गयी हैं परन्तु आज का वैज्ञानिक जो कि चन्द्रलोक की यात्रा कर चुका है अन्तरिक्ष में राकेट स्टेशन बनाने पर विचार कर रहा है इन कथाओं का जैसा का तैसा नहीं मान पायेगा। वैज्ञानिक ने तो रत्नों के प्राप्त होने की खान खोज ली है। रत्नों की भौतिक और रसायनिक बनावट कैसी है, रत्नों में कठोरता गुरुत्व, वर्तनांक कितना और क्या है? वैज्ञानिक बता रहा है, रत्नों के प्रत्यक्ष प्रभाव के परिणामों को देखकर उसके गुण व दोषों पर विचार कर रहा है।

माणिक की खानें :-

माणिक की खानें (माइन्स) बर्मा, श्याम (थाइलैण्ड), श्री लंका और काबुल में पायी जाती हैं। दक्षिण (साउथ) भारत में भी माणिक की खानें हैं। यह पत्थर गुमलाल होता है। जामुनीपन आभायुक्त होता है। कुछ-कुछ मैलापन लिये होता है, टुकड़ा अच्छा भी निकल जाता है, यहां का पत्थर पारदर्शी, अर्द्ध पारदर्शी तथा गुम भी होता हैं, कुछ टुकड़े पारदर्शी भी होते हैं, परन्तु माणिक सबसे मूल्यवान बर्मा की खानों से प्राप्त होता है।

विशेषतायें :-

माणिक का रुख सुर्खी पर होता हैं असली की सतह पर देखेगे तो सुर्खी मालूम होगी, यदि साइड से देखेंगे तो रंग में भिन्नता होगी, असली और नकली माणिक में क्या भेद हैं? साधारण व्यक्ति बाजार में जाकर माणिक को पहचान कर

असली खरीद सकें, कठिन काम है, जिसको असली-नकली का ज्ञान नहीं वह दाग धब्बे रहित चमकदार वाले को ही असली समझकर धोखा खा जाता है। माणिक की पहचान करना एक महत्त्वपूर्ण बात है, जो पुस्तक पढ़कर समझना अथवा लिख देना बहुत कठिन है वर्षों के अनुभव के बाद इसकी पहचान का ज्ञान होता है पुराने अनुभवी पारखी नजरों से देखकर ही इसके असली और नकलीपन को जान लेते हैं।

माणिक के रंग :-

माणिक सूर्य का रत्न है। नवग्रहों में जैसे-सूर्य प्रधान है वैसे ही नवरत्नों में माणिक मुख्य माना जाता है। माणिक वर्ण का लाल और जामुनीपन लिये होता हैं लाल तुरमली को भी दुकानदार माणिक बताकर बेच देते हैं। यह सरासर धोखा है, उससे सावधान रहना चाहिए।

मुख्य रूप से माणिक अल्युमीनियम और आक्सीजन का यौगिक है। इसमें लाल रंग लोहे और क्रोमियम के अल्प मिश्रण से उत्पन्न होता हैं।

खान से निकलने वाला माणिक :-

बिना चमक, दूध जैसा, एक नग में दो रंग, रंग में मलीनता धूम्रवर्ण, काला या सफेद दाग आदि-आदि।

असली माणिक की पहचान :-

माणिक में धधक है और नीलम में भी होती है। रत्न में जो चीर होती है उसमें चमक नहीं होती शीशे की चीर में चमक होती है। रत्न की चीर अप्राकृतिक नहीं होती। अपितु वह टेढ़ी-मेढ़ी होती हैं इमिटेशन में सीधी और साफ चीर होती हैं।

आयुर्वेद में माणिक :-

माणिक की पिस्टी और भस्म दोनों खाने के काम में आती हैं अनुमान भेद से पृथक-पृथक रोगों में उपयोगी होती है माणिक रक्तवर्धक, वायुनाशक और उदर रोगों में लाभकारी होता है।

माणिक दीपक, वीर्यवर्धन, नेत्रों को हितकारी, त्रिदोष एवं क्षयनाशक है। यह त्रिदोष (वात-पित्त-कफ) वमन-विष-कुष्ठक्षय तथा रक्त विकार आदि रोगों को नष्ट करता है। बुद्धिमानों को सेवनीय है।

औषधि के उपयोग में माणिक के उपरोक्त दोष नहीं देखे जाते है रंग का अच्छा तथा पानीदार माणिक होना पर्याप्त है।

ज्योतिष में माणिक :-

माणिक धारण करने से विष का प्रभाव नही होता। इसके प्रयोग से मानसिक और आध्यात्मिक शक्तियों का उदय होता है तथा विशिष्ट दैविक भावों का उदय होता है। स्त्रियों को गर्भपात होने से रोकता है। माणिक प्रयोग से नेत्र रोग (रोहे मोतियाबिन्द) आदि से लाभ करता हैं। जिन व्यक्तियों के जीवन में अस्थिरता अधिक होती है, आज यहाँ, कल वहाँ, आज यह काम, कल दूसरा काम, माणिक रत्न उनके लिये अति उत्तम है। सिंह राशि के लिए राशि स्वामी होने के कारण भाग्य को उन्नत करने में सहायक होता है, जीवन को ऊँचा उठाता हैं माणिक धारण करने से तेजस्वी, प्रतापी, प्रभावशाली बनता है। सिंह, मेष, वृष्चिक राशि वालों के लिये अति लाभकारी है।

धारण विधि :-

इस रत्न को कम से कम 8 रत्ती से 11 रत्ती का पहनना चाहिए। इससे अधिक वजन का पहनना और भी उचित होगा इस रत्न को सोने अथवा अष्ठधातु में जड़ित कर लेना चाहिये। जड़ी हुई अंगूठी पूजा स्थल में पूजा के समय रख लें। रविवार के दिन पूजा से निवृत्त होकर अपने इष्टदेव के चरणों से स्पर्श कर रिंगफिंगर वाली अँगूली में धारण कर लेना चाहिये। सच्चे विश्वास और भाव से पहनने पर अवश्य ही इच्छा की पूर्ति होती है।

माणिक का मूल्य प्रति रत्ती

सुपर क्वालिटी	स्पेशल क्वालिटी	I क्वालिटी	II क्वालिटी
3000/–, 1000/–	700/–,500/–	250/–,150/–	85/–,45/–

हर प्रकार के रत्न एवं उपरत्न कम से कम अधिक से अधिक मूल्य में हमारे यहाँ मिल सकते हैं। धारण करने वालों को सलाह निःशुल्क दी जाती है रत्न और उपरत्न के थोक एवं फुटकर विक्रेता शिव रत्न केन्द्र (रजि०) हरिद्वार है।

नकली साबित करने पर **2,50,000/–** रुपये नकद इनाम

ग्रहों का चक्र बदलता रहता है, आपको मालूम नहीं कौन सा ग्रह अनिष्ट कर रहा है तथा कौन सा अनुकूल दशा में है, इसलिये नवरत्नों से बने जेवर हमारे यहाँ तैयार किये गये हैं। जो निम्न प्रकार हैं :-

चाँदी से बनी असली नवरत्न जड़ित अंगूठियाँ

मूल्य :- 150/–, 200/–, 350/–, 450/–, 525/–

एक-एक रत्ती लगे रत्नों वाली अंगूठी का मूल्य - 1500/–

एक-एक रत्ती से अधिक रत्नों वाली अंगूठी का मूल्य - 2100/–

असली नवरत्न चांदी में पैंडिल, त्रिशूल सतिया, क्रास, चाँदी ॐ का स्टार आदि चाँदी में लाकिट-चौरस, गोल तिकोने साईज में -

मूल्य :- 105/–, 125/–, 150/–, 250/–, 350/–, 525/–, 650/–, 750/–, 925/– तथा फुल साईज में- 1100/– एवं 2100/– रुपये

8 या 10 रत्ती लगे नगों का बाजूबन्द (ब्रासरेट) मूल्य - 1100/–, 3100/–

चाँदी की चैन में नवरत्न छोटे साईज में मूल्य - 550/–, 1100/–

नवरत्नों व उपरत्नों में चाँदी के तार में बनी माला का मूल्य -
रु० 250/–,350/–,550/–,600/–,1100/– प्रति माला

सोने के तार से बनी नवरत्न की माला का मूल्य

रु0 3000/–, 4500/–,5500/–,6500/–,10000/–प्रति माला

卐 ॐ नमः शिवायः 卐

मोती

मोती को संस्कृत में मुक्ता, चन्द्ररत्न, मोक्तिक शुक्ति हिन्दी में मोती, उर्दू में मुरवारीद, अंग्रेजी में-पर्ल (Pearal) कहते हैं।

मोती चन्द्रमा का रत्न है चन्द्रग्रह का द्योतक रत्न मुक्ता समुद्र के अन्दर तलहटी में सीप के अन्दर निर्मित जलीय रत्न हैं मोती का जन्म समुद्र में पैदा हुए एक कीट (घोंघा) के अन्दर होता हैं मोती जल के कीड़े के अन्दर पैदा होने के कारण जलीय रत्न है। घोंघा मुसेल जाति का जल में उत्पन्न होने वाला जीव है। इसमें मोटे धागों के समान कुछ अंग होते हैं जिनके द्वारा यह चट्टानों या अन्य जलीय स्थानों में अपने आपको चिपका सकता है।

घोंघा दो मांस के आवरणों के अन्दर होता है। इन आवरणों से एक लसलसा पदार्थ निकलता है। यह पदार्थ जमकर धीरे-धीरे सीप का रूप धारण कर लेता है यह सीपियां एक ही आकृति की दो भागों में होती है और एक ओर से जुड़ी होती है। घोंघा इसी के बीच में अपने को सुरक्षित मानकर रहता है। सीपी जहाँ से खुली होती है, उसी तरफ से आवश्यकतानुसार मुँह खोलकर अपना भोजन प्राप्त करता हैं।

प्राचीन मत के अनुसार स्वाति नक्षत्र के उदय रहते हुए वर्षा की बून्द जब सीप के अन्दर खुले मुख में समाती है तब यह मोती बन जाती है स्वाति नक्षत्र में बरसे जल के सम्बन्ध में कहावत है -

शुक्ति शंखों गजः कीडःफणी मत्स्यश्च दुर्दरः ।
दणरेते सम ख्यातास्तास्तज्जे मौक्तिकयो नमः ।।

स्वाति नक्षत्र में बरसे हुए जल की बूँद सीप के मुँह में पड़ने से मोती बन जाता है। केले के अन्दर पड़ने से कपूर, सर्प के मुँह में पड़ने से मोती बन जाता है। बांस में पड़ने से बंसलोचन बन जाता है।

मोती की उत्पत्ति आठ स्थानों से होती है। आठों प्रकार के मोतियों में से सामान्यतः सब मोती सबको उपलब्ध नहीं होते, यह केवल उन्हीं को प्राप्त होते हैं जिन्होंने कठिन परिश्रम करके इनकी प्राप्ति की पूर्ण साधना की हो। आधुनिक युग में ऐसे मोती अप्रर्याप्त है, केवल सीप के मोती ही आजकल व्यवहार में आते हैं, मीन मुक्ता भी पहनने के काम आता है। (मीन मुक्ता शिव रत्न केन्द्र पर उपलब्ध है)।

मोती के रंग :-

नीला, सफेद, गुलाबी, मैला, काला, हरियाली लिये चमकदार, ताँबे के समान रंग वाला मोती समुद्र की खाड़ी, पहाड़ी स्रोत एवं पर्वतीय तालाबों में भी मिल जाता है।

प्राकृतिक मोती में निम्न प्रकार के मोती पाये जाते हैं :

मोती के ऊपर फटापन होना, बारीक होना, मस्से के समान उभार, चेचक के जैसे दाग होना, धब्बा, अन्दर मिट्‌टी का होना, श्यामवर्ण मोती भी होता है।

असली नकली की परीक्षा-चावल में डालकर रगड़ने से असली की चमक समाप्त नहीं होती और नकली की चमक खत्म हो जायेगी। असली मोती की ऊपरी सतह नकली मोती से कोमल होती है। अन्य अनेक बारीक बाते हैं। जो केवल क्रियात्मक अभ्यास द्वारा ही जानी जा सकती हैं

मोती को रूई में लपेटकर नहीं रखना चाहिये। रूई की गर्मी से मोती में धारियां (लहर) पड़ जाती है नमी वाली जगह में भी रखने से मोती खराब हो जाता है।

आयुर्वेद में मोती :-

कैल्शियम की कमी के कारण उत्पन्न होने वाले रोगों में यह बहुत लाभकारी है। केवड़े या गुलाब के साथ खरल में घोटकर पिस्टी बनायी जाती है। मुक्ता की अग्नि से भस्म बनायी जाती है।

मुक्ता-शीतल, मधुर, शान्तिवर्धक, नेत्र ज्यातिवर्धक, अग्निदीपक, वीर्यवर्धक, विषनाशक है। कफ, पित्त, श्वास आदि रोगों में अति लाभदायक है, हृदय को शक्ति देता है। इसका प्रयोग विभिन्न रोगों में विभिन्न अनुमानों के साथ किया जाता है।

ज्योतिष में मोती :-

चन्द्रग्रह के कुपित होने पर उससे प्रभावित व्यक्ति को प्रमेह नेत्र रोग, वायु एवं मस्तिष्क रोग हो सकते हैं। चन्द्रग्रह के कुपित होने से जो अनिश्चितता में रहता है, जीवन घोर संघर्षमय बन गया हो, परिस्थितियां प्रतिकूल हों, धारण करना चाहिए। मोती धारण करने से बुद्धि स्थिर होती है, किसी भी बात को बारीकर से समझने की शक्ति शीघ्र बढ़ती है। शरीर में तेज और ओज का विकास होता है। कोई भी निश्चय शीघ्र पूरा होता है, जिससे बात की जाये उस पर प्रभाव पड़ता है, विचार अथवा कार्य करने का मन में उत्साह बढ़ता है।

धारण विधि :-

बहुत से व्यक्ति दो मोतियों की माला ही धारण करते हैं जो कि काफी वजनदार और मूल्यवान हो जाती है। मोती कम से कम 8 रत्ती का पहनना चाहिए। इससे अधिक हो तो और अच्छा है। मोती को चाँदी, पंचधातु की अँगूठी में जड़वा लेना चाहिए। सोमवार के दिन सायंकाल स्वच्छ जल का लोटा लो, उसमें थोड़ा कच्चा दूध डालो, उस लोटे में अंगूठी को छोड़ दो, जल को भगवान शिव की पिण्डी पर चढ़ा दो। अपनी मनोकामना प्रगट करते हुए अंगूठी को भगवान शिव से स्पर्श करके कनकी अँगुली या उसके साथ वाली अँगुली में पहन लेना चाहिए। इसको धारण करने के बाद किसी प्रकार का परहेज नहीं है, कल्पनाशील, भावुक व्यक्तियों के लिये मोती अधिक गुणकारी है।

मोती का मूल्य प्रति रत्ती

सुपर क्वालिटी	स्पेशल क्वालिटी	I क्वालिटी	II क्वालिटी
500/–,200/–	150/–,85/–	65/–, 40/–	30/–,25/–

मीन मुक्ता रेट 25/– रुपये प्रति रत्ती से आरम्भ व शिव रत्न केन्द्र पर मोतियों की माला मिलती है, आयुर्वेदिक औषधि, मोती की पिस्टी और भस्म भी उपलब्ध है। आर्डर देकर मंगवा सकते हैं।

अनेक प्रकार की मालायें

- मोती की माला
- मोती–रुद्राक्ष माला
- रुद्राक्ष की माला
- स्फेटिक–रुद्राक्ष माला
- तुलसी की माला
- चन्दन की माला
- नवरत्न की माला
- नीलम की माला
- मूंगे की माला
- पुखराज की माला
- माणिक की माला
- पन्ने की माला
- स्फेटिक की माला

卐 ॐ नमः शिवायः 卐

मूँगा

मूंगे को संस्कृत भाषा में प्रवाल या विद्रुम कहते हैं। हिन्दी में मूंगा, फारसी या उर्दू में सरजाल, अंग्रेजी में कोरल (Coral) कहा जाता है।

मूँगा खान से निकलने वाला रत्न नहीं है। यह समुद्र से निकाला जाता हैं देखने में इसका रूप बेल की शाखाओं जैसा होता है। मूँगे की बनावट छोटी-छोटी नालियों के समान होती है जो एक दूसरे से जुड़ी होती हैं। मूंगा हर समुद्र में पैदा नहीं होता। जिस समुद्र में इसके लिये तापमान और गहराई अनुकूल होती है, उसी स्थान में मूँगा पैदा होता है।

अनुकूल गहराई एवं तापमान के समुद्र की चट्टानों पर मूँगे का वृक्ष पैदा होता है। वृक्ष ज्यादा बड़ी नहीं होता। उसका रंग भी मूँगे के रंगो जैसा होता है। इसी वृक्ष की शाखाओं को काट-काटकर मूँगा तैयार किया जाता है। इसी प्रकार मूँगा समुद्र से पैदा होने वाला रत्न है। इस रत्न को पूजा के काम में लाया जाता है। इसमें दैवी शक्ति है, ऐसी मान्यता हैं।

मूँगे का रंग :-

मूँगे का रंग सिन्दूरी होता हैं सिंगरफ के समान रंग का भी मूँगा होता है। मूँगा श्वेत वर्ण तथा पीत आभायुक्त (क्रीम कलर) में भी पाये जाते हैं।

मूँगे का रंग लाल के साथ-साथ कालापन लिये हुए भी होता है। गहरा लाल, हल्का लाल भी मूँगा होता है। (सिन्दूरी औरेंज) कलर का मूँगा हनुमान जी के उपासक धारण करते हैं। इसे हनुमान जी का रंग भी कह देते हैं। हनुमान उपासकों के लिये बहुत ही लाभकारी है अनेक हनुमान भक्तों को लाल रंग का मूँगा पहने देखा गया है जबकि लाल रंग हनुमान जी का नहीं है। हनुमान भक्तों को सिन्दूरी रंग का मूँगा ही धारण करना चाहिए।

पेड़ से पैदा हुए मूँगे में धब्बा, दुरंगापन सफेद छींटा कहीं न कहीं पर उभरी हुई दिखाई देती है। यह सब उसका प्राकृतिक स्वरूप है। नकली बनावटी मूँगे एक रंग के बिना दाग-धब्बे के सुन्दर दिखाई देते हैं। नकली के रूप-रंग और उसकी सुन्दरता को देखकर खरीदने वाला धोखा खा जाते हैं अर्थात् नकली को लेकर घर चले जाते हैं। नकली को असली मानकर ले जाने वालों के कारण ही नकली बेचने वालों का साहस बना रहता है।

आयुर्वेद में मूँगा - मूँगे को केवड़ा या गुलाब जल में घिसकर गर्भवती स्त्री के पेट पर लेपन करने से गिरता हुआ गर्भ रूक जाता है।

मूँगे को गुलाब जल में घिसकर छाया में सुखाने से प्रवाल पिस्टी तैयार होती है। पिस्टी को मधु के साथ खाने से शरीर पुष्ट होता है। पान के साथ खाने से कफ और खाँसी में लाभ होता है। मलाई के साथ खाने से शरीर को गर्मी तथा हृदय की धड़कन को लाभ होता है।

ज्योतिष :-

ज्योतिष के अनुसार मूँगे का स्वामी मंगलग्रह है। जिस व्यक्ति पर मंगलग्रह की कुदृष्टि है, उसे मूँगा पहनना चाहिए। जो व्यक्ति शत्रुओं से परास्त हो गये हों, जोखिमों को झेलते हुए जो जीवन में अंधेरा देख रहे हों, उन्हें मूँगा धारण करना चाहिये। मेष एवं वृश्चिक राशि का राशिपति होने से उनके लिये भाग्योन्नति की बाधाओं को दूर करता है। मूँगा रोगनाशक है। रक्त की शुद्धि करता है। भयभीत लोगों का साहस बढ़ाता है।

मेष राशि वालों के लिये व्यापार, नौकरी आदि में उन्नति करता है, जो व्यक्ति समाज में कुछ कर दिखाने की इच्छा रखते हैं, उन्हें मूँगा अवश्य ही धारण करना चाहिए। जिन लोगों के जीवन में मुकदमें, झगड़े चलते हैं, उनके लिये मूँगा अति उत्तम है। मूँगा धारण करने से स्वाभिमान में वृद्धि, विपरीत परिस्थितियों का सामना करने का साहस, फील्ड वर्क में वृद्धि समाज में सम्मान प्राप्त होता है। सिंह राशि वाले और अन्य राशि वाले भी मूँगा धारण कर सकते हैं।

धारण विधि :-

मूँगे को कम से कम 8 रत्ती और 11 रत्ती से ऊपर का पहनना चाहिए। सोने और अष्टधातु में पहनने से शीघ्र लाभकारी होता है। मूँगा, मेष, सिंह, वृश्चिक, राशि वालों को अत्यधिक लाभकारी होता है। मूँगे को मंगलवार के दिन सायंकाल के समय गर्दन, भुजा या अंगुली में धारण करना चाहिए अथवा मूँगे को अंगूठी में जड़वाकर मंगलवार को हनुमान जी के चरणों से स्पर्श कर रिंगफिंगर वाली अंगुली में धारण कर लेना चाहिए।

मूँगे का मूल्य प्रति रत्ती

सुपर क्वालिटी	स्पेशल क्वालिटी	I क्वालिटी
350/-,300/-	250/-,150/-	85/-,65/-

卐 ॐ नमः शिवायः 卐

पन्ना

पन्ने को संस्कृत भाषा में मरकत, तादर्य, फारसी या उर्दू में जर्मुद और अंग्रेजी में इमेरेल्ड (Emerald) कहते हैं।

पन्ना हरे रंग का चमकदार पत्थर होता है। जिस पन्ना में लोच, निम्बस, जर्दी और रंग नीम की पत्ती के समान हो, नीम की पत्ती में हर रंग पीत आभायुक्त होता है। ऐसी पीत आभायुक्त हरितवर्ण पन्ना सर्वश्रेष्ठ माना जाता हैं पन्ना रत्न अपना अस्तित्व बहुत सम्भालकर रखता है। पन्ना देखने में भी बड़ा आकर्षक होता है। हीरों के बीच में भी पन्ने जड़े हो तो वह अपनी चमक-दमक अलग ही दिखाते हुए पाये जाते हैं। व्यक्ति की नजर से नहीं छिपते। किसी आभूषण में पन्ने जड़ दिये जायें तो उनकी हरित आभा हंसते हुए दिखाई पड़ेगी।

विभिन्न खानों के पन्ने की विभिन्नता :-

रूखा चमकहीन अभ्रक के साथ निकलने वाला पन्ना, इसकी अभ्रक जैसी चमक हो जाती है। चीर, दुरंग काला या पीला छींटा, सोना माखी, स्वर्ण के समान इसमें एक भिन्न पदार्थ होता है।

पन्ने की उत्पत्ति :-

रूस, अफ्रीका, भारत (अजमेर), बेल्जियम (ब्राजील), पाकिस्तान, अमेरिका की खान का माल पुष्ट होता है। रंग और पानी में सर्वोत्तम है।

नकली पन्ने :-

पन्ने में जाला होना आवश्यक है। जाला रहित पन्ना नहीं होता है। जाला और रूखापन पन्ने में न हो तो वह असली नहीं हो सकता। नकली बनाने वालों ने भी पन्ने में जाला डालने की कोशिश की है परन्तु बनाये हुए नकली और खान से निकाले हुए असली में बहुत अन्तर है। इस अन्तर को तो रत्न का पुराना पारखी ही समझ सकता है।

कृत्रिम पन्ना :-

सबसे पहले किसी जर्मन फर्म ने 1930 में कृत्रिम पन्ना बनाया था और भी कई देशों ने बनाया। परन्तु माइक्रोस्कोप पर टेस्ट करने से उनके बनावट होने का पता चल जाता है। दो टुकड़ों को जोड़कर भी एक पन्ना बनाया गया, उनके ऊपर का हिस्सा पन्ना, नीचे का हिस्सा बिल्लौर ओर बीच में हरा रंग लगाकर जोड़ दिया जाता है। परन्तु उसके बगल (साइड) से देखने में उसका जोड़ स्पष्ट दिखाई देता है।

आयुर्वेद में पन्ना :-

पन्ना बुध ग्रह का पूज्य रत्न है। बुध ग्रह के विपरीत होने पर मिथुन और कन्या राशि वालों को पन्ना धारण करना चाहिए।

पन्ना पापनाशक है। संकट से बचाता है, बुद्धिदाता है, मानसिक शान्ति मिलती है, क्रोध को शान्त करता है, नेत्रों की ज्योति बढ़ाता हैं। इस रत्न में अनोखी विकिरण शक्ति विद्यमान है। शरीर को स्वस्थ और मन को प्रसन्न रखता हैं।

धारण विधि :-

पन्ना रत्न को कम से कम 8 से 11 रत्ती का पहनना चाहिए। इस रत्न को चाँदी और पंचधातु की अँगूठी में जड़वाकर पहना जाता हैं। बुधवार के दिन सूर्य उदय से पूर्व ही उठकर शौच स्नान से निवृत्त हो जाना चाहिए। उसके बाद मन्दिर में या अपने पूजा स्थल में बैठकर अपनी मनोकामना को अपने इष्ट से प्रकट करें तथा उसे पूरा करने की प्रार्थना भी करें। रत्न जड़ित अँगूठी को धूप-दीप-पुष्प से पूजित करें और अपने इष्टदेव के चरणों से स्पर्श कर सीधे हाथ की कनकी अंगुली में धारण कर लें। कोई किसी प्रकार का विशेष परहेज नहीं है।

पन्ने का मूल्य प्रति रत्ती

सुपर क्वालिटी	स्पेशल क्वालिटी	I क्वालिटी	II क्वालिटी
1100/-,600/-	250/-,150/-	85/-,65/-	45/-,25/-

जप करने के लिये अथवा गले में धारण करने के लिये हमारे यहाँ पन्ने की माला मिल सकती है। पन्ने रत्न की आयुर्वेदिक विधि से बनायी हुई पिस्टी और भस्म भी उपलब्ध है।

आयुर्वेद रसायन

'शिव रत्न केन्द्र' ने प्राचीन पद्धति से सोना, चाँदी, ताँबा, लोहा भाण्डूर, राँगा, कलई, पारा आदि धातुओं की शृंग सीप शंख सखिया, अबरक तथा हीरा, मोती, माणिक, पुखराज, पन्ना, गोमेद, मूंगा, नीलम, लहसुनिया, रत्नों की भस्म, हीरे को छोड़कर सभी रत्नों की पिस्टी योग्य वैद्यों की देख-रेख में तैयार करायी है।

जो नाम दिये गये हैं, उनके अलावा किसी भी प्रकार की भस्मी और पिस्टी के लिये हम से अवश्य पूछ लें। आर्डर मिलने पर तैयार कराकर भेजी जाती हैं असली होने की गारण्टी हमारी होगी। जो सज्जन किसी भी रोग के लिए वैद्य के परामर्श से रसायन प्रयोग कर रहे हैं स्वयं आकर या डाक द्वारा हमसे मंगायें।

✡ आयुर्वेदिक चिकित्सा कराने वालों के लिये मूल्य में विशेष छूट दी जायेगी।

卐 ॐ नमः शिवायः 卐

पुखराज

पुखराज को संस्कृत में पुष्पराग कहते हैं, अंग्रेजी में (White Sapphire) कहा जाता है। रत्नों में पुखराज सबसे लोकप्रिय रत्न है इसका उपयोग लॉकिट, अंगूठी आदि जेवर में किया जाता है।

पुखराज सदैव उपयोगी होता है और इसे सभी राशि वाले पहन सकते हैं। सदैव मान-सम्मान, धन प्राप्ति, एक-दूसरे के अन्दर प्रेम-प्यार व एक-दूसरे से सम्बन्ध बढ़ाता है। शादी-विवाह, परिवार में सुख-शान्ति व ऐश्वर्यशाली रत्न है। इसको जितना अधिक से अधिक पहना जायेगा उसे उतना ही उसके गुण बांध पाते हैं।

नीलम, पुखराज एक ही रसायनिक संगठन के हैं, यह रत्न अपनी प्रकृति अवस्था में कुरुन्दय वर्ग में आते हैं। इनके रंगों की भिन्नता उसमें मिले भिन्न-भिन्न द्रव्य पदार्थों के कारण हो जाती है हल्के पीले रंग में पुखराज अधिक पाया जाता है। पीले रंग का पुखराज ही सर्वश्रेष्ठ और प्रसिद्ध है। परन्तु कुछ समय के उपरान्त आजकल के पुखराज का रंग उतर जाता हैं बहुत कम मात्रा में ही टिकाऊ रंग मिल पाते हैं। पुखराज पर्वतीय बर्फीली शिलाओं के नीचे पाया जाता है। इसके साथ और भी कई उपरत्न पैदा हो जाते हैं। परन्तु पुखराज अन्य रत्नों से भारी टिकाऊ होने के कारण इन शिलाओं से बहकर कंकड़ों की शक्ल में नदी तलों पर भी मिल जाता है। यह ठोस चिकनापन लिए भारी होता है। यह बर्फ पिघलने पर पानी में बाढ़ के कारण शिलाओं से बहकर कंकड़ों के रूप में प्राप्त होते हैं जिसको पारखी लोग ढूंढकर जौहरियों तक पहुँचाते हैं। फिर इसको कारीगर तराशकर खूबसूरत बना देता है। यह चिकनाहट लिए हुए अपनी खूबसूरती को अपने आप ही प्रकट करता है। यह एक नरम पत्थर है। जिसको अधिक चोट लगने पर टूटने का डर रहता है। इसके अन्दर जितने चीर, चपाड़, दाग, धब्बे पाये जाते हैं। यह उतना ही कीमती होता है। अधिक से अधिक मूल्यवान रत्नों के अन्दर भी चिर चपाड़ दिखाई देगा। यही उसकी असली पहचान हैं पुखराज, हीरा आदि कुरुन्दय वर्ग के पत्थरों से कुछ कोमल है। पुखराज को रगड़कर इसमें बिजली पैदा की जा सकती हैं विद्युत शक्ति प्राप्ति के लिये यह एक विशेष रत्न है।

पुखराज की पहचान :-

ग्रह दशा को शान्त करने के लिये पुखराज प्रेमी बाजार में जाकर गहरे रंग की चमक साफ-सुथरे की खोज करते हैं, परन्तु गहरे पीले रंग में पुखराज तो रंगा हुआ रहता है, गहरे रंग की चमक साफ-सुथरा देखकर व्यक्ति बाजार से ले जाते हैं, जब थोड़े से दिनों में उसका रंग उतर जाता है तो ले जाने के बाद पता चलता है कि यह रंग चढ़ाया हुआ था। ऐसी बहुत शिकायतें देखी गयी हैं। पुखराज का रंग तो हल्का पीला ही होता है पुखराज में दाग, धब्बे, दुरंगा आदि सब नेचुरल (प्राकृतिक) होते हैं।

नकली पुखराज (इमीटेशन) सब विदेशों से आता है। जो कि बहुत ही चमकदार गहरे पीले रंग तथा बिना किसी दाग, धब्बे का होता है। खरीदार उनकी चमक-दमक पर रीझता है और बाजार में ठगा जाता है। असली पुखराज को कोई पुराना अनुभवी पारखी नजरों से देखकर ही बता सकता है।

ज्योतिष में पुखराज :-

ज्योतिष शास्त्र में पुखराज को देवगुरु बृहस्पति का प्रतीक माना है। सौभाग्य का प्रतीक है, इनके प्रयोग से वैवाहिक जीवन में मधुरता पैदा होकर सौभाग्य की प्राप्ति होती है, पुखराज रोग-नाशक कीर्ति और पराक्रम की वृद्धि करने वाला, आयु एवं सम्पत्ति का वर्धक माना गया है। सांसारिक सुख एवं दीर्घायु की प्राप्ति होती है, विवाह में विलम्ब हो रहा हो तो शीघ्र और सुलभ हो जाता है, जो गृहस्थ जीवन सुखमय बनाना चाहते हों उन्हें असली पुखराज अवश्य धारण करना चाहिए। पुखराज पहनने वालों की प्रतिष्ठता दिन-प्रतिदिन बढ़ती है, मन में उत्साह बना रहता है। रुके काम बनने लगते हैं, लेखक, वकील, बुद्धिजीवियों के लिये अत्यन्त लाभकारी हैं।

पुखराज का स्वामी (गुरु/बृहस्पति) है। गुरु किसी का बुरा नहीं चाहता। भाई, बहिन, माता-पिता, कुटुम्ब परिवार, पति-पत्नि सभी रिश्तों में प्रेम बढ़ता है। गुरु अधिपति होने से साधु सन्त महात्मा भी इसे धारण कर सकते हैं।

धारण विधि :-

पुखराज आठ से ग्यारह रत्ती का सोने या अष्टधातु की अंगूठी में जड़वा लेना चाहिए। गुरुवार के दिन केले के वृक्ष का पूजन करें, पूजन करते समय अंगूठी को

वृक्ष की जड़ में रख देना चाहिए, पूजा समाप्ति पर अंगूठी को केले के वृक्ष से स्पर्श कर तर्जनी अंगूली में धारण कर लेनी चाहिए। पुखराज को स्त्री, पुरुष कोई भी धारण कर सकता है। वैसे तो पुखराज धनु और मीन राशि के लिये हैं परन्तु इसे कोई भी धारण कर सकता हैं।

इसके धारण करने से घर बैठे रिश्ते आने लगते हैं, वैवाहिक कठिनाई शीघ्र ही हल हो जाती है। यह अनुभव सिद्ध प्रयोग है।

आयुर्वेद में पुखराज :-

पुखराज को गुलाब जल केवड़े के जल में पच्चीस दिन तक घोटना चाहिए। जब काजल की भाँति घुट जाये तब उसे छाया में सुखाकर रख लें। यह पुखराज की पिस्टी तैयार हो गयी। पुखराज की भस्मि भी बनाई जाती है पुखराज की भस्म या पिस्टी पीलिया, आंवधात, कफ, खाँसी, श्वाँस, नक्सीर आदि अनेक रोगों में दी जाती है।

पुखराज का मूल्य प्रति रत्ती

सुपर क्वालिटी	स्पेशल क्वालिटी	I क्वालिटी	II क्वालिटी
3500/–,2100/–	2000/–,1500/–	1100/–,600/–	500/–,250/–

नवरत्न यन्त्र

नव ग्रहों के प्रकोप से बचने के लिये नवरत्न यन्त्र तैयार किया गया है इस यन्त्र में नौ रत्न, हीरा, पन्ना, मोती, मूँगा, पुखराज, माणिक, लहसुनिया, नीलम, गोमेद है। यह असली रत्नों से जड़ित है। इस यन्त्र को दीपावली की रात को मन्त्रों से शुद्ध किया जाता है। नवग्रहों में किसी भी ग्रह के प्रकोप से रक्षा करता है। अन्य ग्रह भी अनुकूल रहते हैं, उसे अपनी दुकान, फैक्ट्री व घर के पूजा ग्रह में रखने से अनेक प्रकार के अनिष्टों से रक्षा करता है। धन लक्ष्मी की वृद्धि प्रदान करने में सहायक है। इसका दर्शन, पूजन, स्पर्श सौभाग्य को बढ़ाने वाला है। इस यन्त्र की कीमत मात्र 2100/– रुपये है।

卐 ॐ नमः शिवायः 卐

नीलम

यह कुरविन्द जाति का रत्न है। नीला अल्युमिनियम और आक्सीजन का यौगिक है। अल्प मात्रा में कोबाल्ट मिला रहने से रंग नीला होता है। नीलम पुखराज के साथ पैदा होता है। नीलम और पुखराज कुरुन्दय वर्ग के रत्नों में है।

नीलम का रंग :-

नीलम गहरे नीले रंग का होता है। गहरा नीला होने से कालापन जैसा देखने में आता है नीलापन लिये हुए आसमानी रंग का भी नीलम होता है सफेद, पीला, गुलाबी रंग में भी नीलम किसी-किसी खादान में पाया जाता है। परन्तु सफेद या गुलाबी कम पाया जाता है।

प्राप्ति स्थान :-

नीलम की खादान बर्फ जमने वाले पहाड़ों में पायी जाती है। बर्फ की चट्टाने जमते-जमते जब नीचे का भाग पत्थर जैसा बन जाता है, नीलम वहां पैदा होता है। नीलम, बर्मा, बैंकाक (थाईलैण्ड) जम्मू (भारत) कष्टवाड़ इलाकों में पाया जाता है, लंका में भी नीलम पैदा होता है।

भारत में लोग लंका का नीलम मांगते हैं, वर्मा के नीलम का भी भारत में प्रचलन है परन्तु विदेशों में भारत के नीलम की बड़ी मांग रहती है। भारत में नीलम की खाने बन्द पड़ी हैं, वास्तव में भारत का नीलम उच्च श्रेणी का है, परन्तु भारतीयों की प्रत्येक वस्तु के प्रति धारणा बन गयी है कि विदेशी वस्तु अच्छी होती है, इसलिये विदेश का नीलम ही मांगते हैं नीलम खुले पानी का सीलोन का माना जा रहा है जो कि पारदर्शी हल्कापन लिये हुए पुखराज के साथ पैदा होता है। सच कहा जाये यह पुखराज ही हैं इसको नीलम मानकर पहन रहे हैं। नये पारखी लोग भी इस और ध्यान नहीं दे रहे हैं। भारत का नीलम नीला (कालापन) लिये हुए गुम पानी का होता है। इसको नीलम न कहकर नीली मरगज आदि बता देते हैं जबकि नीलम मरगज आदि में बहुत बड़ा (जमीन-आसमान जैसा) अन्तर होता है, भारत में नीलम और पुखराज 90 प्रतिशत नकली बिक रहा है।

भारत का नीलम सर्वोत्तम है, जो कि कश्मीर प्रदेश में जम्मू बार्डर में नीलम खदानों से निकाला जाता है, वह स्थान लगभग 15 हजार वर्ग फुट की ऊँचाई पर है। इस भाग में सदा बर्फ जमा रहता है। वहाँ तक पैदल पहुँचना होता है। इस खादान पर पहुँचने पर लगभग बीस दिन लग जाते हैं। कश्मीर में नीलम खादान के बारे में सुना गया है कि इसका पता कुछ यात्रियों द्वारा चला था। वह यात्री जब अफगानिस्तान से देहली को चले थे तो रास्ते में बरसात से पहाड़ गिर गया था। गिरे हुए पत्थरों से निकले अच्छे रंगीन चमकदार पत्थर दिखाई पड़े। वह यात्री इन पत्थरों को अपने साथ खच्चरों पर उठा लाये थे। यह लोग खाने पीने की सामग्री इन पत्थरों के बदले में लेते रहे, उनके हाथों में घूमने के बाद जब यह पत्थर जौहरियों के पास पहुँचे, तब इस खादान की खोज की गई।

आयुर्वेद में नीलम :-

नीलम के चूरे को गुलाब जल या केवड़े के जल में डालकर खरल में घोटा जाता है। अन्य रत्नों की भाँति इसकी भी मिस्टी बनाई जाती है और भस्मी तैयार की जाती है। नीलम रसायन को पान के रस अदरख के रस, शहद, मलाई या मक्खन में भी खिलाया जाता है योग्य वैद्य से परामर्श कर प्रयोग करें यह ज्वर, मिर्गी मस्तिष्क की कमजोरी, हिचकी, उन्माद या पागलपन के रोगों के लिये लाभदायक है।

ज्योतिष के अनुसार :-

नीलम शनि राशि का प्रिय रत्न है। शनि की कुदृष्टि होने पर नीलम अवश्य ही धारण करना चाहिए, नीलम मकर और कुम्भ राशि हेतु अत्यन्त उन्नतिकारक है इन राशियों को नीलम कभी हानि नहीं पहुँचाता नीलम सभी रत्नों से सतोगुणी रत्न है। इसके धारण करने से मनुष्य का मन पवित्र होता है। मन में सात्विक भावना पैदा होती है। दुष्कर्मों का त्याग और सत्कर्म में मन लगता है, सत्य दया, परोपकार के विचार बनते हैं और अपनी सामर्थ्य और शक्ति के अनुसार व्यक्ति धारण करता है। नीलम शनि ग्रह का अधिष्ठात्री देवता है, परन्तु नीलम को सभी राशि वाले धारण कर सकते हैं सभी को लाभ करता है। नीलम शारीरिक स्वास्थ्य के लिये धारण करना चाहिये।

धारण विधि :-

नीलम को 8 रत्ती से 11 रत्ती तक तथा उससे अधिक धारण करना और भी हितकारी होता है। नीलम, चाँदी, पंचधातु की अंगुठी में जड़वा लेना चाहिए। शनिवार

को सुबह स्नान कर एक लौटे में जल, कचा दूध और मीठा डालें तथा अंगुठी को भी लौटे के जल में डाल दें। जल को भगवान शंकर या पीपल के वृक्ष में चढ़ा दें और अंगुठी को उठाकर मध्य अंगुली में धारण कर लें। नीलम रत्न दिन दूनी और रात चौगुनी उन्नति करता है।

नीलम का मूल्य प्रति रत्ती

सुपर क्वालिटी	स्पेशल क्वालिटी	I क्वालिटी	II क्वालिटी
3500/–,2100/–	2000/–,1500/–	1100/–,600/–	500/–,250/–

✡ हमारे यहाँ नीलम की माला भी मिलती है।

✡ नीलम की पिस्टी और भस्मी भी उपलब्ध है।

एकदम असली रूद्राक्ष

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक व गौरी शंकर रुद्राक्ष तथा हर प्रकार के रुद्राक्ष की छोटी बड़ी मालाएँ प्राप्त करें। मूल्य सूची इस पुस्तक में हैं।

卐 ॐ नमः शिवायः 卐

गोमेद

गोमेद को हिन्दी में गोमेद, उर्दू में जरकूनिया, जारगुन तथा जारकून भी कहते हैं, संस्कृत में गोमेदक, पिगलामणि, तुषारमणि या राहूवल्लभ भी कहते हैं। अंग्रेजी में गोमेद को (Zircone) कहा जाता है।

गोमेद का रंग :-

रक्त श्याम, पीत आभायुक्त गोमेद उत्तम माना गया है। इसका रंग मधु के समान, गोमूत्र अथवा अंगारे के समान होता है, यह नरम होता है।

इसकी उत्पत्ति अधिकतर सायनाइट की शिलाओं के अन्दर पाई जाती है यद्यपि यह एक ही स्थान से प्रचुर मात्रा में प्राप्त नहीं होता है। गोमेद गोल चिकने पत्थरों और परतों में घिसे रत्नों के रूप में पानी में घुलकर नीचे बैठी तलछट में मिलता है।

प्राप्ति स्थान :-

ऐसी तलछट प्रायः लंका में पायी जाती हैं लंका के अतिरिक्त भारत में भी गोमेद की खानें हैं। भारत में पटना तथा गया के बीच में कई खानें हैं जहाँ से गोमेद निकाला जाता है। दक्षिण भारत में मैसूर के गोमेद को लंका का गोमेद भी कह दिया जाता है। विदेश का बताकर उसका मूल्य बेचने वाले अधिक ले लेते हैं परन्तु लंका के गोमेद से मैसूर का पत्थर श्रेष्ठ है। भारत की खानों से गोमेद का पत्थर बड़ी मात्रा में निकलता है। भारत के गोमेद की विदेशों में मांग अधिक रहती है।

गोमेद से आयुर्वेद चिकित्सा :-

आयुर्वेद में गोमेद का प्रयोग प्राचीनकाल से ऋषि-मुनियों और वैद्यों द्वारा होता चला आया है। इसके प्रयोग से विभिन्न रोगों का निदान सम्भव है।

गोमेद, कफ, पित्त, पाण्डु तथा क्षय रोगों को नष्ट करता है और दीपन पाचन, रूचिवर्धक बुद्धि प्रबोधक तथा चर्म हितकर है। गोमेद की भस्म का प्रयोग कफ, पित्त और क्षय रोगों में अति हितकर है। उचित अनुपातों के साथ घोटकर सेवन करने से

यक्षमा रोग को नष्ट करता हैं इसकी सूर्य रश्मि चिकित्सा द्वारा पित्त एवं चर्म रोगों में लाभकारी है। इससे दमा, कण्डू, दद्रू आदि चर्म रोग समूल नष्ट हो जाते हैं।

गोमेद औषधि में प्रयोग करने के लिये गोमेद का शुद्ध होना नितान्त आवश्यक है। आयुर्वेद में लिखा है जो स्वच्छ गोमूत्र के समान रंग वाला, कान्तियुक्त, स्निग्ध तथा समानाकार हो, प्रकाशवान, तोल में वजनदार हो, औषधि के कार्य में लेना चाहिये।

ज्योतिष में गोमेद :-

गोमेद राहु ग्रह का कारक है। दैत्य ग्रह राहु के कुपित होने पर प्रभावी व्यक्ति को मानसिक एवं उदर सम्बन्धी रोग उत्पन्न हो सकते हैं, उस व्यक्ति को गोमेद रत्न धारण करने से राहु ग्रह कारक रोगों से मुक्ति मिल सकती है, राहु ग्रह के प्रकोप से मानसिक तनाव बढ़ता है। कार्यकुशलता समाप्त हो जाती है। छोटी-छोटी बातों पर निर्णय लेने के बजाय क्रोध आता है। योजनायें असफल होती हैं। मानसिक उड़ानों में व्यक्ति भ्रमण करता है। उसे गोमेद धारण करना चाहिए।

जिन बच्चों का पढ़ाई में मन नहीं लगता हो। स्त्री रोग से पीड़ित हो, व्यक्ति का मन छटपटाता है या मन में चंचलता है, आत्मज्ञान की चाहत हो तो गोमेद धारण करने से सभी कठिनाइयाँ दूर हो जायेंगी। कार्यों में रूकावट हो रही हो, गोमेद लाभकारी होता है। विशेष जानकारी शिव रत्न केन्द्र एवं श्री प्रकाशेश्वर महादेव मन्दिर देहरादून से प्राप्त करें।

धारण विधि :-

गोमेद कम से कम आठ रत्ती से ग्यारह रत्ती का चाँदी या पंचधातु की अंगुठी में जड़वा लेना चाहिये। गोमेद कुम्भ और मकर राशि को शनि की साढ़ सती में हितकर होता है वैसे इन रत्नों को पहनने के लिये राशि का भी विचार नहीं किया जाता। बुधवार या शनिवार के दिन अपने पूजा गृह में पूजा कर अंगुठी को धारण कर लें। इस रत्न को पहनने के लिये किसी भी राशि का विचार नहीं किया जाता है।

गोमेद गोमूत्र कलर में 15 रुपये प्रति रत्ती तथा गोमेद की माला भी 'शिव रत्न केन्द्र' एवं श्री प्रकाशेश्वर महादेव मन्दिर देहरादून पर उपलब्ध है।

गोमेद का मूल्य प्रति रत्ती

सुपर क्वालिटी	स्पेशल क्वालिटी	I क्वालिटी	II क्वालिटी
250/-,150/-	85/-,65/-	45/-,30/-	25/-,15/-

卐 ॐ नमः शिवायः 卐

लहसुनिया

संस्कृत में इसका नाम सूत्रमणिया वैडूर्य कहते हैं, इसको बिड़लाक्ष भी कहा जाता हैं बिल्ली की आंख के समान इसका रूप भी होता है। इसलिये पाश्चात्य विद्वानों ने इसे बिल्ली की आँख (Cat's Eye) भी कहा है।

वैडूर्य का रंग पीत, आभायुक्त होता है और सफेद भी पाया जाता हैं यदि लकीर सूत के समान फैला हुआ हो तो वह चद्दर कहलाती हैं चादर या सूत रहित भी लहसुनिया होता है।

लहसुनिया के रंग :-

पीत आभायुक्त सफेद (Cream Colour) रंग का होता हैं आभायुक्त नीले और हरे रंग का मिश्रण भी अल्प मात्रा में पाया जाता है। एक व्याघ्र नेत्र (Tiger's Eye) के समान रंग का सूत मिश्रित श्याम होता है। यह कई रंग का होता है।

वैडूर्य में मुख्यतया अल्युमिनियम तथा अल्प मात्रा में अयम और क्रोमियम तत्व होते हैं।

उत्पत्ति :-

लहसुनिया, बर्मा, सीलोन तथा भारत (त्रिवेन्द्रम) में पाया जाता है निकालते समय वह कंकड़ की शक्ल में होता है इसको एक तरफ से तराश कर सफाई की जाती है, इसको साफ करने वाली और से हिलाने पर एक लकीर दिखाई देती है, इसी को डोरा कहते हैं।

जिन पर्वतों में यह रत्न पैदा होता है, वहां पानी से कटकर उसके प्रभाव के साथ नदियों में बहकर भी आता है। जल की कमी होने पर नदी के रेत से छानकर भी इस रत्न को निकाला जाता है। दक्षिण भारत में नदियों के किनारे खेतों में भी लहसुनिया मिलता हैं मध्य प्रदेश में भी इसकी नई खादान पाई गयी है, इन खादानों से लहसुनिया अधिक मात्रा में उच्च श्रेणी का निकाला जा रहा है।

जहसुनिया केतु ग्रह का रत्न हैं केतु ग्रह के प्रकोप से बचने के लिये लहसुनिया पहनना चाहिए। यह रत्न काफी प्रभावी माना जाता हैं राहु की दशा को भी यह रत्न

अनुकूल रखता है, राहु, केतु तथा शनि की दशा में भी धारण किया जा सकता है।

इसके धारण करने से शारीरिक दुर्बलता दूर होती है, दिमागी परेशानियाँ दूर होती हैं लहसुनिया अनुकूल आ जाये तो शीघ्र ही मालामाल बना देता हैं।

धारण विधि :-

इस रत्न को चाँदी या पंचधातु की अंगुठी में जड़वा लेना चाहिये। बुधवार या शनिवार के दिन प्रातः सूर्य उदय होने से पहले शुद्ध या गंगा जल में धोकर अपने इष्टदेव के चित्र, मूर्ति आदि के चरणों से स्पर्श कर सीधे हाथ की बीच वाली अंगुली में धारण कर लेना चाहिये। विश्वासपूर्वक धारण की हुई वस्तु सफलता अवश्य देती है।

आयुर्वेद :-

लहसुनिया की पिस्टी या भस्मी आयुर्वेद चिकित्सा में काम आती हैं। इससे वायुशूल कृमि रोग, बवासीर, कफ, ज्वर मुखगन्ध आदि रोग नष्ट हो जाते हैं।

नोटः- हमारे यहां नवरत्नों की बनी हुई माला तैयार मिलती है। आयुर्वेद शास्त्रीय विधि से बनाई हुई लहसुनिया की पिस्टी और भस्म भी उपलब्ध है।

लहसुनिया का मूल्य प्रति रत्ती

सुपर क्वालिटी	स्पेशल क्वालिटी	I क्वालिटी	II क्वालिटी
300/–,150/–	85/–,65/–	45/–,30/–	25/–,15/–

शुद्ध किये गये बाजूबन्द

1.	3 रत्ती साईज चाँदी में	750/–
2.	5 रत्ती साईज चाँदी में	1150/–
3.	6 रत्ती साईज चाँदी में	1350/–
4.	8 रत्ती साईज चाँदी में	2150/–
5.	10 रत्ती साईज चाँदी में	5100/–
6.	लगभग 15–20 रत्ती साईज में महारत्न	7150/–
7.	लगभग 25–30 रत्ती हाई पावर साईज में	11000/–

नोटः- उपरोक्त सभी वस्तुओं में हीरा छोटे साईज में होगा।

卐 ॐ नमः शिवायः 卐

उपरत्न

- मून स्टोन-इसे चन्द्रमणि भी कहते हैं। यह मोती का उपरत्न है। इसको पहनने से मानसिक शान्ति मिलती है।
- स्फटिक-यह हीरे का उपरत्न है इसको धारण करने से पुत्र और धन की प्राप्ति होती है। इसमें सरस्वती का वास होता है।
- आनेक्स-(हरा मरगज) पन्ने का उपरत्न होता है इसको धारण करने से आँखों की रोशनी बढ़ती है।
- गारनेट-(तामड़ा) मूँगा माणिक का उपरत्न है।
- सुनहैला टोपाज-यह पुखराज का उपरत्न है।
- गोमेद-इसका कोई उपरत्न नहीं हैं।
- टाईगर-(पासन) लहसुनिया के नाम से बिकता है।
- ओपल-मोती व हीरे का काम करता है।
- धुनैला-इसे स्मोकिंग टोपाज कहते हैं। यह एक शौकिया पत्थर होता है।
- ब्लैक स्टार-यह शनि की शान्ति के लिये पहना जाता है।
- फिरोजा-मटमैले कलर में होता है। मुसीबत में पड़ा इन्सान इसे पहन ले तो तुरन्त अपना प्रभाव दिखाता है।
- वेरूज-नीले रंग का होता है।
- विक्रान्त-तुरमली हीरे का उपरत्न है।
- गौदन्ता-मूनस्टोन को कहते हैं।
- लालड़ी-माणिक की जगह पहना जाता है।
- लाजवर्त-शनि का पत्थर है।
- कटहैला-जामुनी रंग का होता है।
- दानाफिरंग-गूर्दे के दर्द में फायदा करता है।
- मारियम-यह बवासीर में फायदा करता है।
- हजरते बेर-सभी प्रकार के दर्दों में फायदा करता है।
- हकीक-मारबल, स्टोन, खेल-खिलौने बनाने का एक शुद्ध पत्थर राशि में फायदा करता है। यह कई रंगों में पाया जाता है। इसमें अनेक क्वालिटी होती है, यह सस्ता व महंगा दोनों प्रकार का होता है।

卐 ॐ नमः शिवायः 卐

रत्न व उपरत्न 84 प्रकार के होते हैं। इनके नाम निम्न हैं, सभी शिव रत्न केन्द्र से प्राप्त किये जा सकते हैं।

1. माणिक
2. हीरा
3. पन्ना
4. नीलम
5. लहसुनिया
6. मोती
7. मूँगा
8. पुखराज
9. गोमेद
10. कहरुवा
11. जबरदात
12. तामड़ा
13. विक्रान्त
14. धुनैला
15. फिरौजा
16. सिन्दूरिया
17. सीजरी
18. सुरमा
19. स्फटिक
20. बेरूज
21. मरगज
22. लालड़ी
23. टेढ़ी
24. दारमना
25. दूरेनजफ
26. पनधन
27. पारस
28. वासी
29. लाजवर्त
30. सनसितारा
31. सुनहरा
32. स्टार माणिक
33. पुटाश
34. ओपल
35. उदाऊ
36. एमन्नी
37. कटैला
38. कासला
39. गौदन्ती
40. गौरी
41. गुरु
42. चकमक
43. गौदन्ती
44. चित्ति
45. जजेमानी
46. चुम्बक
47. जहरमोहरा
48. तिलियर
49. तुरसावा
50. दानाफिरंग
51. मक्खी
52. मरियम
53. दूधिया
54. लास
55. वसरी
56. संगेमहूद
57. दाँतला
58. नरम
59. पितानिया
60. फातेजहर
61. यशव
62. रातरतुवा
63. सुलेमानी
64. मारवर
65. मूबेनजफ
66. मूसा
67. हकीक
68. हजरते वेर
69. अजूबा
70. अहवा
71. अम्बरी
72. अलेमानी
73. अमलिया
74. कुदरत
75. कसौटी
76. कुरण्ड
77. झरना
78. डूर
79. संगे जराहत
80. सीवार
81. संखिया
82. सिफरा
83. सोहनमक्खी
84. हदीद

卐 ॐ नमः शिवायः 卐

असली रुद्राक्ष

✡ मूल्य-सूची ✡

तादाद	रुद्राक्ष के मुख	स्पेशल क्वालिटी मूल्य	II क्वालिटी
एक पीस	1 मुखी	11000/—	1125/—
एक पीस	2 मुखी	51/—	5/—
एक पीस	3 मुखी	51/—	5/—
एक पीस	4 मुखी	11/—	5/—
एक पीस	5 मुखी	11/—	3/—
एक पीस	6 मुखी	11/—	5/—
एक पीस	7 मुखी	51/—	21/—
एक पीस	8 मुखी	251/—	105/—
एक पीस	9 मुखी	525/—	250/—
एक पीस	10 मुखी	425/—	210/—
एक पीस	11 मुखी	925/—	450/—
एक पीस	12 मुखी	625/—	300/—
एक पीस	13 मुखी	1225/—	825/—
एक पीस	14 मुखी	5125/—	2100/—
एक पीस	गौरी शंकर	1100/—	550/—
एक पीस	गर्भ गौरी	525/—	251/—
एक पीस	गणेश रुद्राक्ष	151/—	51/—

असली रुद्राक्ष की मालायें

आंवले के आकार में रुद्राक्ष	25/– प्रति माला
आंवले के आकार में छोटी रुद्राक्ष	35/– प्रति माला
जंगली बेर के आकार में रुद्राक्ष	50/– प्रति माला
जंगली बेर के आकार से छोटी रुद्राक्ष	85/– प्रति माला
जंगली बेर व काबली चने के बीच के आकार में मालायें	95/– प्रति माला
काबली चने से मोटा आकार	105/– प्रति माला
काबली चने के साईज में	125/– प्रति माला
काबली चने से साईज से छोटी	145/– प्रति माला
इससे भी जरा और छोटी	165/– प्रति माला
काबली चने के साईज से जरा कुछ छोटी	205/– प्रति माला
काले चने के साईज में	255/– प्रति माला
काले चने के साईज से छोटी	305/– प्रति माला
इन दोनों से छोटी	355/– प्रति माला
काली मिर्च साईज में रुद्राक्ष माला	450/– प्रति माला
जीरों नं में	525/–, 625/–850/– प्रति माला
डबल जीरों नं में	1000/–,1100/–1200/–,1500/– प्रति माला
सुन्नी जीरों नं में माला	1500/–, 1800/–2000/– प्रति माला
स्फटिक 108 दानों की माला भिन्न–2 साईज में	105/–,125/–, 150/–, 250/–350/–,500/–,600/–प्रति माला
रुद्राक्ष माला चाँदी के तार में 55 दानों की, काबली चने के साईज में	95/–प्रति माला
मूँगे की माला (छोटी)	5000/–,3500/–,2500/–प्रति माला
स्पेशल क्वालिटी में स्फटिक माला	200/–,250/– प्रति माला
सुपर क्वालिटी में स्फटिक माला	350/–,450/–,650/– प्रति माला
गारनेट की माला	40/–,50/–,65/– प्रति माला

मानसिक शान्ति, धन प्राप्ति और मान–सम्मान के लिये हर राशि का पत्थर 25/–रु0 रत्ती है। कम से कम 8–11 रत्ती पहना जाता है।

सुपर क्वालटी स्फटिक मालायें (डायमण्ड कटिंग)

1,000/–	1,500/–	2,000/–

शुद्ध की हुई स्फटिक की मालायें

फुल साईज	200/– रुपये
मीडियम साईज	150/–रुपये
मीडियम साईज से छोटी	125/–रुपये
सबसे छोटी माला	75/–रुपये

स्पेशल क्वालिटी में स्फटिक मालायें

सबसे छोटी माला	100/–रुपये
इससे बड़ी माला	150/–रुपये
इससे छोटी माला	200/–रुपये
इससे छोटी माला	250/–रुपये
इससे छोटी माला	300/–रुपये
इससे छोटी माला	350/–रुपये
इससे छोटी माला	500/–रुपये
इससे बढ़िया माला	600/–रुपये

असली नौरत्न की अंगूठी चांदी में

प्रथम साईज	(सबसे छोटे नग में)	125/– रुपये
द्वितीय साईज	(उससे बड़े नग में)	150/– रुपये
तृतीय साईज	(उससे बड़े नग में)	250/– रुपये
चतुर्थ साईज	(उससे बड़े नग में)	325/– रुपये
पंचम् साईज	(उससे बड़े नग में)	425/– रुपये
षष्ठम् साईज	(उससे बड़े नग में)	550/– रुपये
सप्तम् साईज	(उससे बड़े नग में)	750/– रुपये
अष्टम् साईज	(उससे बड़े नग में)	900/– रुपये
नवम् साईज	(उससे बड़े नग में)	1100/– रुपये

卐 ॐ नमः शिवायः 卐

शिव रत्न केन्द्र (रजि०)

27 सीढ़ियाँ चढ़ने के उपरान्त, सन्तल सराय, तीसरी मंजिल
गऊघाट, हरिद्वार- 249401

'शिव रत्न केन्द्र' रत्न रुद्राक्ष ज्योतिष यन्त्र, तान्त्रिक सामग्री हर प्रकार की मालाओं का व्यापारिक संस्थान है उक्त सामग्रियों के लिये जिसकी देश तथा विदेशों में ख्याति है यह संस्थान गंगातट, गऊघाट, हरिद्वार पर स्थित है।

अब तक जो सज्जन 'शिव रत्न केन्द्र' के सम्पर्क में नहीं आये उनके लिये हरकी पैडी (ब्रह्मकुण्ड) पर प्रत्येक यात्री स्नानार्थ हेतु आता है। हरकी पैड़ी के निकट ही गंगाजल बहाव (दक्षिण दिशा में) सुभाषघाट है इसी घाट पर आजाद हिन्द सेना के सेनानायक श्री सुभाषचन्द्र बोस की आदम कद मूर्ति इसके नीचे सन्त महात्माओं का धूना लगा रहता है, इस स्थान पर शिव रत्न केन्द्र लिखा बोर्ड रास्ते के साथ रखा दिखाई देगा। बोर्ड के पास पहुँचने पर अपने दाहिनी और रंग-बिरंगे, चमकदार कई प्रकार के राशि पत्थर, रुद्राक्ष मालायें, शंख, सीप आदि सजे सजाये लगे हुए मिलेंगे। यहाँ इस सामग्री पर 3–4 कार्यकर्ता आपको मिलेंगे। जो श्री बख्तामल जी की समाधि स्थल है इसी के साथ अल्का होटल का द्वार है। यह दुकान शिव रत्न केन्द्र के नमूना रूप है परन्तु यह बिक्री केन्द्र नहीं है। मूल्यवान एवं प्रत्येक वस्तु अधिक मात्रा में मिलने वाले शोरूम पर पहुंचा देंगे और यदि आप स्वयं ही पहुंचना चाहें तो इस दुकान से तीस कदम आगे गऊघाट गंगापुल की सीढ़ियों से (दक्षिण से उत्तर को चलें तो 50 कदम आगे बोर्ड शिव रत्न केन्द्र) का मिलेगा। इस बोर्ड को आप ध्यान से पढ़िये।

सावधान :

लगभग पन्द्रह वर्ष पहले हरिद्वार मे रत्नों की कोई दुकान नहीं थी। शिव रत्न केन्द्र की प्रसिद्धि को देखकर रत्नों की कई दुकाने खुल गयी है। भ्रमित करने के लिये सभी ने शिव रत्न केन्द्र से मिलते-जुलते शक्ति आदि नाम भी रख लिये। अतः शिव रत्न केन्द्र बोर्ड के साथ नौसिखियों के बोर्ड भी लगे हुए हैं। जो इबारत शिव रत्न केन्द्र के बोर्ड पर लिखी गई हैं, उसी से मिलती-जुलती इन्होंने भी लिखवाई हैं शिव रत्न

केन्द्र ने अगर सावधान लिखवाया है तो उन्होंने भी वैसा ही लिखवाया। जो बोर्ड को ध्यान से न पढ़ने के कारण कोई नीचे की दुकान पर ही फंस जाते हैं, जिन्होंने खत्री जी का फोटों देखा हो, किसी कारण इनसे पूछ भी लें कि महाराज जी कहां हैं, तो उत्तर मिलता है, काम से गये हैं आने वाले हैं हम उनके भाई या बेटे या अन्य सम्बन्धी हैं ऐसी बातों पर विश्वास कर ग्राहक ठगा जाता है। इसलिये आप नीचे न ठहरिये। कृपया तीसरी मंजिल पर ही पधारें।

सन्तल सराय

बोर्ड के पास खड़े होकर इमारत की ओर देखने से एक ओर बर्तनों की दुकान दिखाई देगी, दूसरी ओर नग-नगीनें, अंगुठी, रुद्राक्ष, दीवार पर तांत्रिक सामग्री लिखी हुई आदि दिखाई देगीं मालूम होता है यह दुकान इमारत के द्वार भाग में से ही बनाई गयी है। इन दोनों दुकानों के बीच एक कम चौड़ा (लगभग 3 फुट) रास्ता है। इसी में आप प्रवेश करें इसी इमारत को सन्तल सराय कहते हैं। सन्तल ग्रामवासियों ने इमारत को यात्रियों के विश्राम हेतु बनाया था। अब भी इसमें यात्री आकर विश्राम करते हैं। ऐसे स्थानों को धर्मशाला भी कह देते हैं मुगलकाल में ऐसी इमारतों को सराय भी बोला जाता था। इमारत में ऊपर चलिये, 'शिव रत्न केन्द्र' शोरूम में पहुंचिये।

शिवदास के दर्शन

इस कम चौड़े द्वार से अन्दर पहुँचने पर 'शिव रत्न केन्द्र' का बोर्ड मिलेगा। जिसमें तीर का निशान संकेत कर रहा हैं इस संकेत से (दाँई ओर) चलने पर सीढ़ियां मिलेंगी, हर तीन चार या पाँच सीढ़ियों के बाद मोड़ आता है लगभग तीन मोड़ के बाद फ्लोर बाँई ओर की सीढ़ियां हैं। परन्तु आपको दाहिनी ओर ही मुड़ते हुए जाना है बीच में कई जगह 'शिव रत्न केन्द्र' लिखा मिलेगा, तीसरी मंजिल पर पहुँचकर शोरूम में शिवदास मूलचन्द खत्री जी के दर्शन होंगे।

शिवदास मूलचन्द खत्री जी

गंगोत्री, यमुनोत्री, बद्री, केदार से काशी और बंगाल तक बहुत से सन्त महात्माओं से परिचय है, अपनी कुछ साधना करते हैं। वर्ष में उस साधना का अनुष्ठान भी करते हैं। परन्तु उसे प्रकाशित नहीं करते। रत्न और रुद्राक्ष के द्वारा जनता की सेवा युवावस्था के प्रारम्भ से ही करते रहे हैं। स्वयं प्रारम्भ से राशि के पत्थरों, रत्नों से जड़ित

अष्टधातु की अंगुठियां घूम-घूम कर बेचा करते थे, अंगुठी बेचते-बेचते थोड़े ही दिनों में छोटी सी दुकान खोल ली। दुकान में सहायक कार्यकर्ता रखने पड़े उन कार्यकर्ताओं ने खत्री जी से कुछ सीखकर अपनी-अपनी दुकानें खाले ली। हरिद्वार में नग-नगीनें अंगूठी आदि की दुकान शिव रत्न केन्द्र से कुछ सीखे हुए नव सीखियों की है। परन्तु खत्री जी के काम में कोई कमी नहीं आई क्योंकि उनके अनुभव से लोगों को लाभ होने से प्रसिद्धि बढ़ती रही। इसी कारण आज उनका शोरूम मूल्यवान रत्न, रुद्राक्ष, केसर, कस्तूरी अष्टगन्ध से युक्त परिपूर्ण है। जयपुर, मद्रास आदि नगरों के जौहरी उनका आदर करते हैं। देश में रत्नों के बाजार में उनका आदर करते हैं। रत्नों के बाजार में उनकी जौहरियों में गिनती है। सभी हरिद्वार के बाजार को छोड़कर वे अपने घर (निवास स्थान) में बैठते हैं। यहाँ भी उनके पास ग्राहक पहुंचता है। सभी दुकानों से अच्छी बिक्री होती है।

ऐसा क्यों? खत्री जी को रत्न और रुद्राक्ष के सम्बन्ध में बड़ा पुराना अनुभव है। अब तक कई लाख ग्राहकों को उनके नाम की राशि के हिसाब से रत्न दिये। उनमें से सभी की मनोकामना पूर्ण हुई। यदा-कदा किसी को लाभ नहीं हुआ, तो उसे दी हुई वस्तु को वापस बदलकर दिया, इसी प्रकार अनेक लोगों पर हुए प्रयोगों का अध्ययन किया जाये तो बड़े गहन अनुभव से गुजरना होगा।

रोजगार में घाटा हो रहा है, घर में कलह रहती है, बीमारी घेरे रहती है, असाध्य रोग से पीडित है, समाज में इज्जत नहीं रह गई है, पढ़ने में मन नहीं लगता, नौकरी नहीं लग रही या उन्नति नहीं हो रही है, मुकदमें में फंसे हुए हैं आदि-आदि। शिवदास जी से बताइये अवश्य ही आपको निःशुल्क उपाय बताया जायेगा।

लाखो लोगों को लाभ पहुँचाने का अर्थ है खत्री जी किसी को नकली वस्तु नहीं देते यदि व्यक्ति की परख में अपनी अयोग्यता होने पर भी योग्यता दिखाकर नकली पसन्द कर लें तो उसके लिये यह अपना गारन्टी कार्ड नहीं देते हैं।

शिव रत्न केन्द्र के प्रचार करने के लिये उनका कहना है भगवान शंकर घर बैठे सबसे अधिक दे रहे हैं तो प्रचार किसलिये किया जाये। मेरे या केन्द्र के नाम से ठगा न जाये, इसलिये बोर्ड लगा दिये हैं।

शिव रत्न केन्द्र से कोई भी वस्तु खरीदने पर गारण्टी कार्ड दिया जाता है, जिसमें लिखा होगा-नकली साबित करने वाले को 2,50,000/— रुपये नकद इनाम दिया जायेगा।

।।इति।।

–शिवदत्त

卐 ॐ नमः शिवायः 卐

राशि के पत्थरों का मेरा सही अनुभव

मैंने काफी समय से लगभग 45 वर्षों से दुनियां में राशि के नग (स्टोन) पहनायें। दुनिया के इस कौने से उस कौने तक मेरी मेहनत, मेरी लगन, भगवान शिव की अटूट कृपा तथा माँ गंगा के आशीर्वाद से इन राशि के पत्थरों की कामयाबी बढ़ती ही जा रही है। इन्हें पूरे विश्व के अन्दर काफी आदमी इस्तेमाल करने लगे हैं। आज से बीस वर्ष पूर्व के समय को मुड़कर देखें, तो इन वस्तुओं का प्रचलन नहीं था। इनका किसी को अनुभव भी नहीं था। प्रत्येक आदमी इसके धारण करने से भयभीत रहते थे। इसे लम्बे अरसे के अनुभव से समस्त दुनिया को आश्वासन देकर समझा-समझाकर ये राशियों के नग-नगीनें पहनाये गये और उससे दुनियां में लोगों को लाभ मिला और चमत्कार एक नहीं लाखों करोड़ों हुए। आज के युग में 70 प्रतिशत लोग इन राशियों के पत्थरों को पहनकर लाभ उठा रहे हैं। कुछ समय के उपरान्त पूर्ण 100 प्रतिशत लोग लाभ उठाने लगेंगे। मैं अपने पूर्ण जीवन के अनुभव तथा विश्वास की बात बता रहा हूं। किसी भी प्रकार संकोच न करें, अपनी राशि के नग-नगीनों पर विश्वास करके पहनने चाहिये। इनसे हर प्रकार की कामयाबी हासिल करें। विश्वास द्वारा धारण की गई वस्तु हमेशा लाभ ही पहुंचाती है।

नोट :- यहाँ पूरे स्थान मन्दिर, आश्रम, धर्मशाला शोरूम के लम्बे चौड़े क्षेत्र तथा हरिद्वार के अन्दर एक विशाल, शिव रत्न केन्द्र (रजि०) विश्वविख्यात है, सब उस परमपिता परमेश्वर श्री प्रकाशेश्वर महादेव की कृपा से राशि के नग-नगीने व जवाहरात और रुद्राक्ष का ही सम्पूर्ण चमत्कार है। आगे आपकी अपनी स्वेच्छा है। विशेष जानकारी के लिये आप हमसे सम्पर्क करें। जिसके लिये न तो हमें कोई कष्ट होगा और न ही आपको कोई मूल्य अदा करना पड़ेगा। सलाह हमारी इच्छा आपकी।

मैं यहां भोलेनाथ श्री प्रकाशेश्वर महादेव का सेवादार हूँ। इसके अतिरिक्त कुछ नही। यहाँ उनके दर्शन के लिये आये हुए समस्त श्रद्धालु एवं परमभक्त लोगों की सेवा में भालेनाथ श्री प्रकाशेश्वर महादेव जी की तरफ से हूं।

सेवादार

शिवदास मूलचन्द खत्री

हमारे यहाँ बढ़िया किस्म के असली रत्न और एक मुखी से चौदह मुखी रुद्राक्ष के छोटे-बड़े दाने मिलते हैं।

जैसे नीलम, माणिक, पुखराज, लहसुनिया, गोमेद, मूँगा, पन्ना, मोती तथा असली रुद्राक्ष के दाने व मालायें तथा अनेक प्रकार के उपरत्न इत्यादि।

✡ असली माल की गारन्टी दी जाती है।

✡ रुद्राक्ष महात्म्य व रत्न ज्ञान धारण विधि की पुस्तक भी उपलब्ध है।

✡ हमारे यहाँ माल होल सेल व कमीशन रेट पर भी मिलता है।

✡ हर प्रकार के स्टोन की मालायें हमारे यहाँ से प्राप्त करें।

शुभकामनायें एवं शुभ सन्देश !

सर्वव्यापी परमपिता परमेश्वर की महान् कृपा तथा आशीर्वाद समस्त प्रेमियों, बन्धु- बान्धओं, आदरणीय माताओं और बहिनों व देश-विदेश की प्रेमी जनता से हमें अनेक पत्र प्रतिदिन प्राप्त होते रहते हैं। उन सब महानुभावों के असीम प्यार एवं श्रद्धा का मैं बहुत आभारी हूँ।

मैं उन सभी महानुभावों का हृदय से आभारी हूँ जो मुझे सेवा का अवसर प्रदान करते हैं। मैं उन सबका भी बहुत आभारी हूँ जिनके मैं दर्शन नहीं कर सका और वह शिव रत्न केन्द्र की उन्नति में लगे रहते हैं, मैं सभी शिव रत्न केन्द्र के शुभचिन्तकों के लिये ईश्वर से उनके कल्याण की कामना करता हूँ कि ईश्वर उनका जीवन सदा खुशहाल बनाये रखे। मैं आगे भी आशा करता रहूँगा कि आप सभी का अमूल्य सहयोग मिलता रहे। यदि मुझसे जाने अनजाने में कोई गलती हो गई हो तो उसको क्षमा करें तथा पत्र द्वारा सूचित भी करें जिससे हम भविष्य में अपनी गलतियों का सुधार कर सकें।

निवेदन :-

शिव रत्न केन्द्र में आने वाले सभी शुभचिन्तकों से निवेदन है कि वे अपने साथियों को सलाह व खरीदारी की सेवा के लिये 27 सीढ़ियों चढ़ने के उपरान्त, सन्तल सराय, तीसरी मन्जिल के पते पर भेजें। आपके इस सहयोग के लिये मैं सदा आभारी रहूँगा।

निवेदक

शिवदास मूलचन्द खत्री

आवश्यक नियम

परमपिता परमेश्वर भगवान श्री प्रकाशेश्वर महादेव मन्दिर पर आने वाले सभी यात्रियों एवं दर्शनार्थियों का हम हार्दिक स्वागत करते हैं। यहाँ पर सभी मंदिरों से अलग नियम व सेवा भगवान भोलेनाथ ने उपलब्ध कराई है, जो निम्न प्रकार है।

१. सिद्धपीठ श्री प्रकाशेश्वर महादेव मन्दिर एक प्राइवेट संस्थान है।

२. सिद्धपीठ श्री प्रकाशेश्वर महादेव मन्दिर शिव रत्न केन्द्र हरिद्वार के इष्टदेव का स्थान है।

३. सिद्धपीठ श्री प्रकाशेश्वर महादेव मन्दिर पर किसी भी प्रकार का दान, चन्दा, चढत्रावा आदि चढ़ाना सख्त मना है तथा मन्दिर के नाम से किसी भी कार्यकर्त्ता को पैसा आदि कोई वस्तु देना निषेध है। नियमों के उल्लंघन करने वाले व्यक्ति को दण्डित किया जा सकता है।

४. श्री प्रकाशेश्वर महादेव मन्दिर पर समस्त दर्शनार्थियों के लिये चाय, नाश्ता व भोजन निःशुल्क उपलब्ध हैं

५. इस पवित्र सिद्धपीठ पर दो धर्मशालाओं का निर्माण कराया गया है। कुछ कार्य चल भी रहा है जो कि आने वाले यात्रियों के लिये ठहरने की व्यवस्था निःशुल्क की गई है तथा भोजन, चाय व नाश्ता मन्दिर की ओर से निःशुल्क उपलब्ध है।

६. शिव मन्दिर के इस शोरूम से प्रत्येक वस्तुओं की बिक्री की आमदनी द्वारा प्राप्त धन मन्दिर व धर्मशाला जैसे धर्म कार्यो पर खर्च किया जाता है।

७. उपरोक्त सभी प्रकार के मन्दिर पर होने वाले व्यय (खर्चे) को यहाँ भगवान शिव (शिव रत्न केन्द्र) के माध्यम से करवाते हैं। अत्यधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :-

---

शिव रत्न केन्द्र (रजि०)
27 सीढ़ियां चढ़ने के उपरान्त,
सन्तल सराय, तीसरी मंजिल,
गऊघाट, हरिद्वार
☎ : 0133–426965, 428769
📱 9837007030

शिवदास मूलचन्द खत्री
श्री प्रकाशेश्वर महादेव मन्दिर
शिवपुरी, मसूरी रोड़,
देहरादून (उत्तरांचल)
☎ : 0135–734155, 734799
📱 9837049555

सत्यम् शिवम सुन्दरम्

1. सच्चाई व ईमानदारी ही हमारा प्रधान कर्म है। जिसने आज हमारा भाग्य ही बदल डाला।
2. सत्य ही हमारे जीवन में उच्च कर्मो की प्रेरणा देता है।
3. सच्चाई से झूठ, बेईमानी एवं मक्कारी भी घबराते हैं।
4. सच्चाई न तो किसी से दबती है, और न ही दबाई जा सकती है।
5. सच्चाई बोलने पर किसी भी प्रकार का संकोच नहीं होना चाहिए।
6. सत्य ही आपको अमर, अजर व वैभवशाली बना देगा।
7. सत्य बोलने वाले को सदा निडर रहना चाहिए।
8. सत्य ईश्वर का दूसरा रूप है।
9. सत्य बोलने से ईश्वर भी प्रसन्न होते हैं।
10. सत्य का पालन करने वाला हर प्रकार के दुःखों से मुक्ति पा लेता है।
11. सच्चाई समाज को कड़वी लगती है।
12. सच्चाई ईश्वर को अति प्रिय लगती है। हमें सच्चाई का पालन करके अपने जीवन को सुखमय बनाना है।

नोट :- कृपया ध्यान रहे कि हंसी-मजाक के समय झूठ का इस्तेमाल न हो तभी सच्चाई का अनुभव होगा।

– शिवदास मूलचन्द खत्री



卐 ॐ नमः शिवाय 卐

श्री प्रकाशेश्वर महादेव मन्दिर

शिवपुरी, मसूरी रोड, देहरादून (उत्तरांचल)

शिवदास मूलचन्द खत्री

एवम्

शिव रत्न केन्द्र (रजि०) हरिद्वार

27 सीढ़ियां चढ़ने के उपरान्त, सन्तल सराय, तीसरी मंजिल गऊघाट, हरिद्वार

फोन-0135-734799, 734155, 735053 दे. दून
मोबाइल नं0 9837049555 देहरादून
फोन-0133-426965, 428769 हरिद्वार
मोबाइल नं0-9837007030 हरिद्वार

मूल्य सूची

अपने नाम अक्षर अनुसार राशि एवं रत्नों की जानकारी हेतू

नामाक्षर	राशि	स्वामी	नक्षत्र रत्न
चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ	मेष	भौम	मूंगा
इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो	वृष	शुक्र	हीरा
क, की, कु, घ, ड, छ, के, को, क्ष	मिथुन	बुध	पन्ना
हि, हु, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो	कर्क	चन्द्र	मोती
मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे,	सिंह	सूर्य	माणिक
टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो	कन्या	बुध	पन्ना
रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते	तुला	शुक्र	हीरा
तो, ना, नी, नू, ने नो, या, यी, यू	वृश्चिक	भौम	मूंगा
ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे	धनु	बृहस्पति	पुखराज
ज, जी, जू, जे, जो, खा, खी, खू, खे, खो, गा, गी, ज्ञ	मकर	शनि	नीलम
गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा	शनि	कुम्भ	नीलम
दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची	बृहस्पति	मीन	पुखराज

मूंगा	हीरा	पन्ना	मोती	माणिक	नीलम	पुखराज	गोमेद	लहसुनिया
सुपर क्वालिटी रु. 300.00 प्रति रत्ती रु. 350.00 प्रति रत्ती स्पेशल क्वालिटी रु. 150.00 प्रति रत्ती रु. 250.00 प्रति रत्ती Ist क्वालिटी रु. 65.00 प्रति रत्ती रु. 85.00 प्रति रत्ती	सुपर क्वालिटी रु. 6000.00 प्रति 30 सेंट स्पेशल क्वालिटी रु. 4000.00 प्रति 30 सेंट Ist क्वालिटी रु. 2000.00 प्रति 30 सेंट IInd क्वालिटी रु0 1000.00 प्रति 30 सेंट	सुपर क्वालिटी रु. 600.00 प्रति रत्ती रु. 1100.00 प्रति रत्ती स्पेशल क्वालिटी रु. 150.00 प्रति रत्ती रु. 250.00 प्रति रत्ती Ist क्वालिटी रु. 65.00 प्रति रत्ती रु. 85.00 प्रति रत्ती IInd क्वालिटी रु0 25.00 प्रति रत्ती रु. 45.00 प्रति रत्ती	सुपर क्वालिटी रु. 200.00 प्रति रत्ती रु. 500.00 प्रति रत्ती स्पेशल क्वालिटी रु. 85.00 प्रति रत्ती रु. 150.00 प्रति रत्ती Ist क्वालिटी रु. 40.00 प्रति रत्ती रु. 65.00 प्रति रत्ती IInd क्वालिटी रु0 25.00 प्रति रत्ती रु. 30.00 प्रति रत्ती	सुपर क्वालिटी रु. 1000.00 प्रति रत्ती रु. 3000.00 प्रति रत्ती स्पेशल क्वालिटी रु. 500.00 प्रति रत्ती रु. 700.00 प्रति रत्ती Ist क्वालिटी रु. 150.00 प्रति रत्ती रु. 250.00 प्रति रत्ती IInd क्वालिटी रु0 45.00 प्रति रत्ती रु. 85.00 प्रति रत्ती	सुपर क्वालिटी रु. 2100.00 प्रति रत्ती रु. 3500.00 प्रति रत्ती स्पेशल क्वालिटी रु. 1500.00 प्रति रत्ती रु. 2000.00 प्रति रत्ती Ist क्वालिटी रु. 600.00 प्रति रत्ती रु. 1100.00 प्रति रत्ती IInd क्वालिटी रु0 250.00 प्रति रत्ती रु. 500.00 प्रति रत्ती	सुपर क्वालिटी रु. 2100.00 प्रति रत्ती रु. 3500.00 प्रति रत्ती स्पेशल क्वालिटी रु. 1500.00 प्रति रत्ती रु. 2000.00 प्रति रत्ती Ist क्वालिटी रु. 600.00 प्रति रत्ती रु. 1100.00 प्रति रत्ती IInd क्वालिटी रु0 250.00 प्रति रत्ती रु. 500.00 प्रति रत्ती	सुपर क्वालिटी रु. 150.00 प्रति रत्ती रु. 250.00 प्रति रत्ती स्पेशल क्वालिटी रु. 65.00 प्रति रत्ती रु. 85.00 प्रति रत्ती Ist क्वालिटी रु. 30.00 प्रति रत्ती रु. 45.00 प्रति रत्ती IInd क्वालिटी रु0 15.00 प्रति रत्ती रु. 25.00 प्रति रत्ती	सुपर क्वालिटी रु. 150.00 प्रति रत्ती रु. 300.00 प्रति रत्ती स्पेशल क्वालिटी रु. 65.00 प्रति रत्ती रु. 85.00 प्रति रत्ती Ist क्वालिटी रु. 30.00 प्रति रत्ती रु. 45.00 प्रति रत्ती IInd क्वालिटी रु0 15.00 प्रति रत्ती रु. 25.00 प्रति रत्ती
अधिक मूल्यवान मूंगा आर्डर व एडवांस देने पर मंगाये जा सकते हैं।	अधिक मूल्यवान हीरा आर्डर व एडवांस देने पर मंगाये जा सकते हैं।	अधिक मूल्यवान पन्ना आर्डर व एडवांस देने पर मंगाये जा सकते हैं।	अधिक मूल्यवान मोती आर्डर व एडवांस देने पर मंगाये जा सकते हैं।	अधिक मूल्यवान माणिक आर्डर व एडवांस देने पर मंगाये जा सकते हैं।	नीलम सतोगुणी तथा अच्छे कर्म कराता है। सही मार्ग पर ले जाकर उन्नति एवं तरक्की देता है	अधिक मूल्यवान पुखराज आर्डर व एडवांस देने पर मंगाये जा सकते हैं।	गामेद दिमागी तनाव को दूर कर पढ़ाई लिखाई के लिए उपयोगी होता है।	अधिक मूल्यवान लहसुनिया आर्डर व एडवांस देने पर मंगाये जा सकते हैं।

मूंगा, पन्ना, माणिक, नीलम, पुखराज, गोमेद, लहसुनिया, मोती, स्फटिक, गारनेट, मरगज (जैड), लाजवर्त (लैपिस) एवं रुद्राक्ष माला स्फटिक रुद्राक्ष माला व अन्य जवाहरात की मालायें सस्ती व महंगी हर प्रकार की माला भी उपलब्ध है।

नोट: उपरोक्त मूल्यवान रत्न एवं उपरत्न व नगों के अतिरिक्त कम मूल्यवान परन्तु बहुत प्रभावशाली नग जैसे स्मोकी टोपाज ब्लैक स्टार, स्वर्ण पत्थर मैलेकाइट, लैपिस लेज्यूलो, जैड टाइगर आई, एक्वामेरीन, फिरोजा, सनस्टोन, पित्तोनिया, कार्लियन। हमारे प्रदर्शन कक्ष में उचित मूल्यों पर हमेशा उपलब्ध हैं। स्थानापन्न नगों व कम मूल्यवान नगों के मूल्य 5 रुपये प्रति रत्ती से तीस रुपये प्रति रत्ती तक गुणानुसार उपलब्ध हैं।

नोट:अमरीकन डायमण्ड के आभूषण, मोती के आभूषण तथा अन्य कई प्रकार की खूबसूरत मालाएँ हमारे यहाँ पर उपलब्ध हैं।

नोट: हमारे यहाँ की खरीदी हुई वस्तु नकली साबित करने पर, 2,50,000/- रुपये का ईनाम दिया जायेगा। बिके हुए माल के बदले कोई भी सामान ले सकते हैं। अनेक प्रकार की पूजा तांत्रिक सामग्री हमारे यहाँ से प्राप्त करें। हमारी प्रत्येक वस्तु शुद्ध मिलेगी। माल का कुल मूल्य एडवांस भेजकर इंश्योर्ड डाक द्वारा प्राप्त कर सकते हैं।



卐 Om Namah Shivaya 卐

SHRI PRAKASHESHWAR MAHADEV MANDIR

Mussoorie Road, Dehradun (Uttranchal)

SHIV DAS MOOLCHAND KHATRI

&

SHIV RATNA KENDRA (REGD.)

Santal Sarai, IIIrd Floor, Gau Ghat, Hardwar (Uttranchal)

Ph-0135-734799, 734155, 735053 D.Dun
Mobile. No. 9837049555 D. Dun
Ph-0133-426965, 428769 Hardwar
Mobile. No.-9837007030 Hardwar

Rate List

Lucky Stone According to Date of Birth

Apprpximate Date as per English Calender	Sun. Sign.	Ruling Star	Astral Gems
14th April to 15th May	Aries	Mars	Coral
15th May to 15th June	Taurus	Venus	Diamond
15th June to 15th July	Gemini	Mercury	Emerald
17th July to 16th Aug.	Cancer	Moon	Pearl
17th Aug. to 16th Sep.	Leo	Sun	Ruby
17th Sep. to 16th Oct.	Virgo	Mercury	Fmerald
17th Oct. to 16th Nov.	Libra	Venus	Diamond
17th Nov. to 15th Dec.	Scorpio	Mars	Coral
16th Dec. to 14th Jan.	Sagittarious	Jupiter	Yellow-Sapp.
15th Jan. to 12th Feb.	Capricorn	Saturn	Blue-Sapphire
13th Feb. to 14th March	Aquarius	Saturn	Blue-Sapphire
15th Mar. to 13 April	Pisces	Japiter	Yellow-Sapp.

Coral	Diamond	Emerald	Pearl	Ruby	Blue Sapphire	Sapphire	Gomed	Cat's Eye
SUPER QUALITY	SUPER QUALITY	SUPER QUALITY	SUPER QUALITY	SUPER QUALITY	SUPER QUALITY	SUPER QUALITY	SUPER QUALITY	SUPER QUALITY
Rs. 300.00 Per Ratti	Rs. 6000.00 (30 Cent)	Rs. 600.00 Per Ratti	Rs. 200.00 Per Ratti	Rs. 1000.00 Per Ratti	Rs. 2100.00 Per Ratti	Rs. 2100.00 Per Ratti	Rs. 150.00 Per Ratti	Rs. 150.00 Per Ratti
Rs. 350.00 Per Ratti		Rs. 1100.00 Per Ratti	Rs. 500.00 Per Ratti	Rs. 3000.00 Per Ratti	Rs. 3500.00 Per Ratti	Rs. 3500.00 Per Ratti	Rs. 250.00 Per Ratti	Rs. 300.00 Per Ratti
SPECIAL QUALITY	SPECIAL QUALITY	SPECIAL QUALITY	SPECIAL QUALITY	SPECIAL QUALITY	SPECIAL QUALITY	SPECIAL QUALITY	SPECIAL QUALITY	SPECIAL QUALITY
Rs. 150.00 Per Ratti	Rs. 4000.00 (30 Cent)	Rs. 150.00 Per Ratti	Rs. 85.00 Per Ratti	Rs. 500.00 Per Ratti	Rs. 1500.00 Per Ratti	Rs. 1500.00 Per Ratti	Rs. 65.00 Per Ratti	Rs. 65.00 Per Ratti
Rs. 250.00 Per Ratti		Rs. 250.00 Per Ratti	Rs. 150.00 Per Ratti	Rs. 700.00 Per Ratti	Rs. 2000.00 Per Ratti	Rs. 2000.00 Per Ratti	Rs. 85.00 Per Ratti	Rs. 85.00 Per Ratti
Ist QUALITY	Ist QUALITY	Ist QUALITY	Ist QUALITY	Ist QUALITY	Ist QUALITY	Ist QUALITY	Ist QUALITY	Ist QUALITY
Rs. 65.00 Per Mala	Rs. 2000.00 (30 Cents)	Rs. 65.00 Per Ratti	Rs. 40.00 Per Ratti	Rs. 150.00 Per Ratti	Rs. 600.00 Per Ratti	Rs. 600.00 Per Ratti	Rs. 30.00 Per Ratti	Rs. 30.00 Per Ratti
Rs. 85.00 Per Mala		Rs. 85.00 Per Ratti	Rs. 65.00 Per Ratti	Rs. 250.00 Per Ratti	Rs. 1100.00 Per Ratti	Rs. 1100.00 Per Ratti	Rs. 45.00 Per Ratti	Rs. 45.00 Per Ratti
	IInd QUALITY	IInd QUALITY	IInd QUALITY	IInd QUALITY	IInd QUALITY	IInd QUALITY	IInd QUALITY	IInd QUALITY
	Rs. 1000.00 (30 Cents)	Rs. 25.00 Per Ratti	Rs. 25.00 Per Ratti	Rs. 45.00 Per Ratti	Rs. 250.00 Per Ratti	Rs. 250.00 Per Ratti	Rs. 15.00 Per Ratti	Rs. 15.00 Per Ratti
		Rs. 45.00 Per Ratti	Rs. 30.00 Per Ratti	Rs. 85.00 Per Ratti	Rs. 500.00 Per Ratti	Rs. 500.00 Per Ratti	Rs. 25.00 Per Ratti	Rs. 25.00 Per Ratti

Other Valuable Rossary available	Note : More valuable Diamond, Coral, Emerald, Ruby, Blue sapphire, Yellow sapphire, Gomed, Pearl & Cat's Eye will be deliver by Regd. Post, after advance payment.

Note : A part above mentioned precious and Semi-precious Gem-Stones. There are Sub-precious but effective stones such as smoky Topaz, Black Star, Golden-Stone, Malachite, Lapis-Lazuly, Jade, Tigereye, Aquamarine, Turquoise, Sun-Stones, Pitonia, Cerlian all readily available at reasonable parices at our Show Room.
Prices of substances stones and sub precious stone are from 5/- per ratti to 30/- per ratti according to quality. After purchasing replacement available.

+ A part body challenging our materials will be given an Cash Award Rs. 2,50,000/-
+ We have a large collection of guaranted stone such as Diamond, Coral, Emerald, Pearl, Ruby, Sapphire, Rudraksha (Small & Big) Sandalwood (Red & White) & a number of material required for performing Pooja & Tantra in Wholesale & Retail. To know your Luck-Stone and accurate astrological Advice contact-**Shiv Ratna Kendra** (Regd.) Hardwar & **Shri Prakasheshwar Mahadev Mandir**, Mussoorie Road, Dehradun.

शिव रत्न केन्द्र (रजि०)

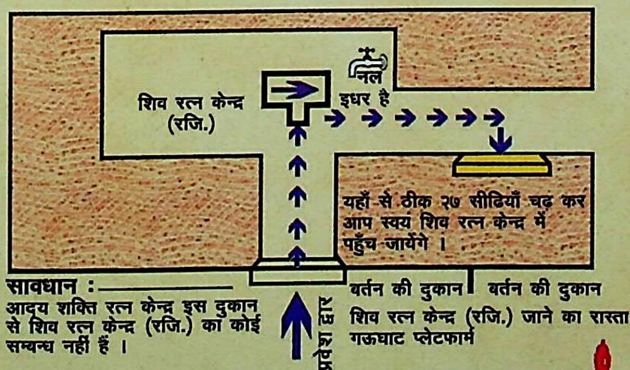
सत्ताईस सीढ़ियां चढ़ने के उपरांत
सन्तल सराय, गऊघाट, हरिद्वार (उत्तरांचल)

हरिद्वार सन्तों एवं महात्माओं की तप स्थली है। यहां पर सन्तों के आशीर्वाद से नग–नगीने, रत्न, रूद्राक्ष आदि धारण करने से हजारों मनुष्य अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति करते हैं।

गंगा के पावन तट गऊघाट सन्तल, सराय, तीसरी मंजिल पर स्थित शिव रत्न केन्द्र 45 वर्षो से लोगों की आस्था और विश्वास का प्रतीक माना जाता है। यहां पर सभी प्रकार के राशि के रत्न, नग–नगीने रूद्राक्ष, उसकी मालाएं और अन्य पूजा की सामग्री, तांत्रिक सामग्रियां उचित दामों पर उपलब्ध रहती हैं । यहां पर उपलब्ध माल की पूरी गारंटी होती है तथा नकली साबित करने वाले को 2,50,000/– का इनाम दिया जायेगा। अधिक जानकारी के लिये लिखें या स्वयं सम्पर्क करें

शिवदास मूलचन्द खत्री





हर की पैड़ी से दक्षिण की ओर गंगा के किनारे लगभग 75 कदम चलने पर

मुद्रक : सुदर्शन प्रिंटिंग प्रेस, आर्यनगर, ज्वालापुर (हरिद्वार)



श्री प्रकाशेश्वर महादेव मन्दिर

मसूरी रोड, देहरादून





शिवदास मूलचन्द खत्री

शिव रत्न केन्द्र (रजि०)

27, सीढ़ियां चढ़ने के उपरांत,

सन्तल सराय, गऊघाट हरिद्वार (उत्तरांचल)

☎ 0133-426965, 428769



श्रीमती सुशीला देवी